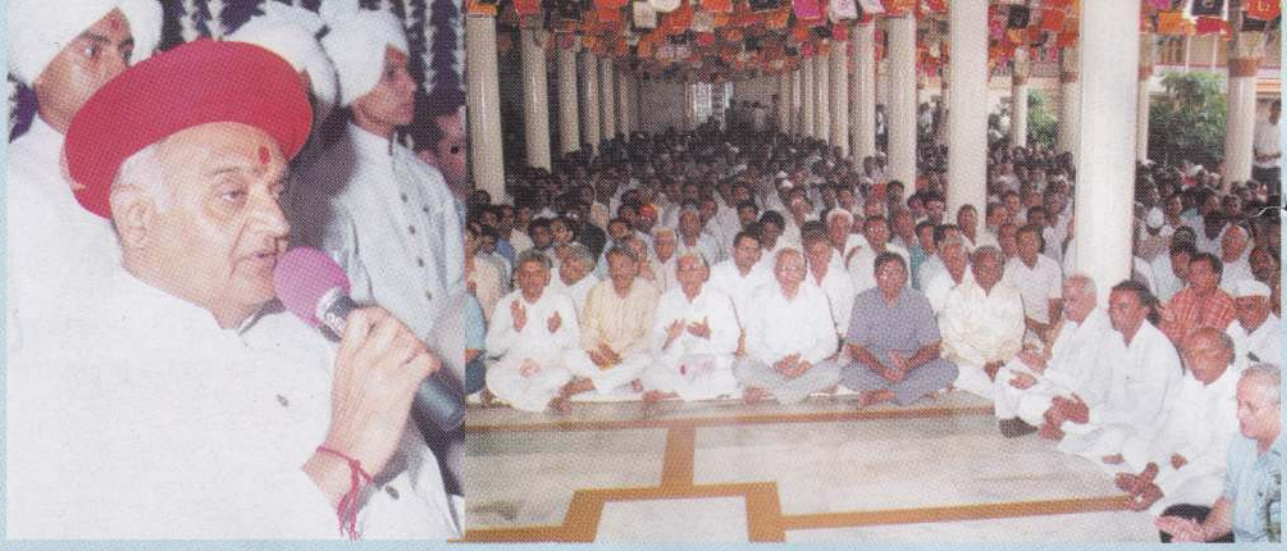
SHREE SWMINARAYAN
श्री स्वामिनारायण

July.'2004



गुरु पूर्णिमा के दिन
धर्मवंशी गुरु का
पूजन तथा गुरु के
आशीर्वचन

પ્રકાશકઃ- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:-Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



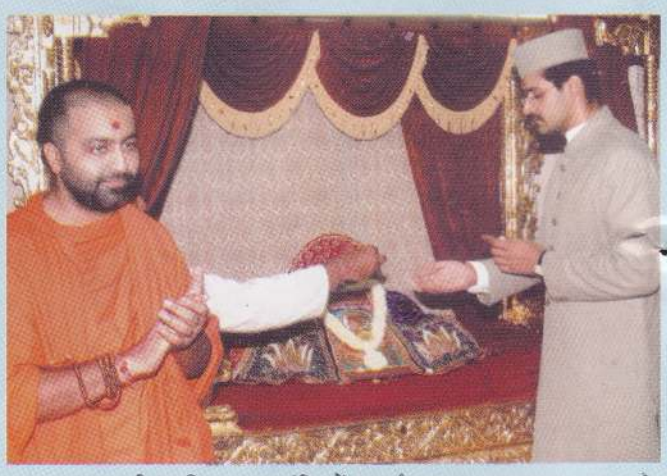
गुरुपूर्णिमा के शुभ अवसर पर अहमदाबाद मंदिर के सभामंडप में संतो-हरिभक्तों को आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री।



नसीतपर (मूलीदेश) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा के प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारते हुए यजमान।



नसीतपर(मूलीदेश) में हाईस्कूल की भूमि पूजन करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ शा.स्वा. पूर्णप्रकाशदासजी तथा यजमान।



नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर में सुवर्ण सुख शय्याका उद्घाटन करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ महन्त स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजी।



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु.
आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स
०७९-२७४५२१४५

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
वंशपारंपरिक
देशमें ३०१-००
विदेश२००१-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ३ जुलाई -२००४

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी स्मरेखा एवं भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी स्मरेखा	३
३.	लेकलेन्ड मंदिर में पदार्पण किये हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री	४
४.	अमूल्य आचार ग्रन्थ शिक्षापत्री	७
५.	जीवन की महक	८
६.	गोपालानंद स्वामी द्वारा वर्णित श्रीहरिकां सर्वावतारी लक्षण	९
७.	सत्संग द्वारा अमृतका आस्वाद	१०
८.	दृढ निश्चयवाले भक्त की सहायता के लिए प्रभु जरुर आते है।	१४
९.	अडिग निष्ठा	१५
१०.	गुरुजीकी अमृतवाणी	१७
११.	स.गु. श्री ब्रह्मानंद स्वामी का जीवन चरित्र	१८
१२.	बाल वाटिका (१) जीव बचाना शीखो	२०
१३.	समाचार वृत्तांत	२१

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : snndmandir@india.com

अ स्म दी य म्

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

अपनी हिन्दू संस्कृति में गुरु का स्थान खूब महत्व का है। जगत का प्रत्येक मुमुक्षु सच्चे गुरु की खोज में रहता है। सभी मुमुक्षु अनपे अन्तर के हृदय से चाहते हैं कि हमें ऐसा गुरु मिले कि - भगवान का साक्षात्कार करादे। सभी अपने ढंग से गुरुके प्रति अनहद प्रेम करते है, भावना रखते हैं। एक ही गुरु में आदरप्रेम सम्मान करने वाले कम ही होते हैं। जब कि नाना जगहों पर जाकर माथा टेकने वाले बहुत होते हैं।

अपनी संस्कृत भाषा में फैली हुई वैदिक संस्कृति को अक्षरदेह देकर देवनागरी लिपी में लिखकर "भगवान का स्वस्म और ज्ञान" समस्त जगत के समक्ष प्रस्तुत करने वाले परम् उपकारी परमात्मा भगवान वेद व्यास नारायण के जन्मदिन को सभी मुमुक्षु समाज गुरुपूर्णिमा के स्म में मनाता है।

जब तक सच्चा गुरु नही मिलता तब तक अनेक अज्ञानी गुरुओं का त्याग करना उचित नहीं है। इस बात को स.गु. रामान्द स्वामी के चरित्र से समझा जा सकता है। इसके साथ स.गु. मुक्तानंद स्वामी का जीवन चरित्र तो सभी मुमुक्षुओं को याद करने लायक है। भगवान श्री स्वामिनारायणने अपने उद्धव सम्प्रदाय में जिस धर्मकुल को गुरुस्थान पर प्रतिष्ठित किया और आचार्य परम्परा की धारा बहाया वह वन्दन करने योग्य है।

वर्तमान काल में श्री नरनारायणदेव देश में गुरु पद पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री हम सभी को प्राप्त हुए हैं। जो हमसभी के लिये सौभाग्य की बात है। निष्कुलानंद स्वामी अपने काव्य में कहते हैं कि - "गुरु कृपाए सुख पामिए, गुरु कृपाये उपजे ज्ञान। निष्कुलानंद गुस्कृपा करे तो, आपे अविचल दान" ऐसे परमादरणीय गुरुमहाराज की कृपा दृष्टि समस्त सत्संग पर नित्य बनी हुई है। जिस मुमुक्षु को ऐसे धर्म गुरु से गुस्मंत्र मिला है, वह अवश्य मोक्ष का अधिकारी बनेगा। गुस्पूर्णिमा के शुभ दिन पर अहमदाबाद मंदिर में देश देशान्तर से पू. संत तथा १० हजार से भी अधिक हरिभक्त प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ तेजेन्द्रप्रसादजीको "षष्ठी पूर्ति महोत्सव" के उपलक्ष्य में गुरुपूजन करके गुस्ऋण से मुक्त होने का नम्र प्रयास करके प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त किया था।

भक्तो ? भगवान श्री स्वामिनारायणने हमें जो धर्मगुरु आचार्य महाराजश्री को दिया है, उनके प्रति हृदय की निष्ठा अर्पित करके उन्ही की आज्ञा में रहते हुए भगवान श्रीहरि की कृपा प्राप्त करे।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
- *शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का*
जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

जुन - २००४

<u>विदेश धर्मयात्रा</u>

नारायणपर (कच्छ) में हरिभक्तों द्वारा लंडन (यु.के.) में आयोजीत उत्सव में पदार्पण तथा वहाँ से अमरीका में सत्संग के प्रचार्थे पदार्पण

दि. २८-६-२००४ को स्वदेश वापस लौंटे ।



भावी आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रूपरेखा

जुन - २००४

२ से ४ हरिद्वार स्वामिनारायण मंदिर में पारायण में पदार्पण ।

६ नारायण घाट मंदिर में सुवर्ण सुखशैया के उद्घाटन के अवशर पर पदार्पण ।

११ प.भ. डॉ. दिलीपभाई आमेटा के यहाँ पदार्पण, जीवराजपार्क ।

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोतसव के अवशर पर पदार्पण .

१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर खोखरा महेमदाबाद में पाटोत्सव के अवशर पर पदार्पण ।

१६ श्री घनश्यामभाई एम्पोरियम में पदार्पण खोखरा ।
प.भ. मगनभाई करमशीभाई पटेल के यहाँ पदार्पण खोखरा ।

१९ श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी पाटोत्सव के अवसर पर पदार्पण ।
यश कीर्ति डेरी के उद्घाटन पर पदार्पण, वस्त्राल ।
नवकार ड्रग्स प्रा.लि. के उद्घाटन पर पदार्पण, आंबावाडी ।
प.भ. सोनी जगदीशचंद्र अंबालाल शो-रूम के उद्घाटन पर पदार्पण ।

२० कोठंबा गाँव में पदार्पण ।

२१. प.भ. रामभाई भगत के 'भगत ओटो कन्सल्ट' के उद्घाटन अवशर पर पदार्पण ।

२२ कोटेश्वर श्री सहजानंद गुरुकुल पदार्पण ।

२३ प.भ. दलसुखभाई वी. देवाणी के वहाँ पदार्पण ।

२४ श्री स्वामिनारायण मंदिर, विरमगाम (बहनोका) में पदार्पण ।

२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर दर्शनार्थ हरिभक्त के यहाँ पदार्पण
शाम को साणंद सभा में पदार्पण ।

२८ प.भ. पटेल माधवलाल के 'यमुना हार्डवेर' के उद्घाटन के अवशर पर पदार्पण, दरियापुर

लेकलेन्ड सीटी - फ्लोरिडा मंदिर में पदार्पण किये हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री

फ्लोरिडा लेकलेन्ड सीटी में मुख्यमार्ग पर अतिविशाल जगह में अपना श्री स्वामिनारायण मंदिर है ।

ता. ८-६-२००४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा महंत शा. स्वा. निर्गुणदासजी पदार्पण किये थे । जैसे प.पू. महाराजश्री मंदिर के प्रांगणमें प्रवेश किया की ११ कलश युक्त बालिकाओ ने तथा सभी हरिभक्तोने उनका भावपूर्वक स्वागत किया था । "मारे आज प्रियतम घेर आव्या....." इन शब्दो का फ्लोरिडा की भूमी पर प्रथमबार साक्षात्कार हुआ ।

प्रथम प.पू. महाराजश्रीने सिंहासन में स्थापित श्री नरनारायणदेव तथा श्री घनश्याम महाराज की आरती उतारी । तत्पश्चात प.पू. महाराजश्रीका अभिवादन टेटोनाबीच के श्री भरतभाई और महेन्द्रभाई ने किया और आरती उतारी ।

सभा में पू. महंत स्वामीने सुंदर बात कही थी कि हम सब तो अक्षरधाम के नियमतः वीसा वाले है । अर्थात् प.पू. आचार्य महाराजश्री के संलग्न होने के कारण सीधे सत्संग में रहकर वही दिव्य सुख प्राप्त कर रहे है ।

सुंदर भजन कीर्तनो को सुनाकर आचार्य महाराजश्री ने आशीर्वचन में कहा कि -

'मै' और 'तु' इन दोनो का महत्व है मैं अर्थात् अहम-जब सत्संग में जाना हो, भजन भक्ति प्राप्त हो वहाँ "मै जाउगा" एसा रखना और यहा 'तु' का अर्थ यह है कि श्रीजी महाराज को सदैव आगे रखना, तो सभी तरफ से सुख आते है । दो जहाज समुंदर में चलते हो तो जो नाविक किसी भी दिशा के बगैर चलाता है उसका कोई ठीकाना नही लगता किन्तु जो नाविक ध्रुवो के अनुसार चलता है वह अपनी मंजील पर जरुर पहुंचता है । इसी प्रकार हमे शिक्षापत्री को ध्रुव मानकर व्यवहार करना चाहिए ।

यहाँ अभी विशाल शिखरबंध मंदिर की तैयारी हो चुकी है । और कुछ ही समय में श्रीहरि बीराजमान होंगे ।

टेम्प - ज्योर्जिया के आसपास के २५० सत्संगी उपस्थित सत्संगीयोने दिव्य दर्शन-सुख का आनंद लिया था ।

- फ्लोरिडा सत्संग मंडल

वचनामृत में श्री नरनारायणदेव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने षष्टि पूर्ति महोत्सव में श्रीहरि के सभी आश्रितोको एक अमूल्य दिव्य भेट दी । श्रीहरि के अधर स्वस्मने स्वहस्तो से वचनामृत का दोहन कर समस्त सत्संग को अर्पण की इस पुस्तिका का जो संपूर्ण वांचन कर जीवन में उतारे तो सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव उसका अवश्य कल्याण करेगें उसमें कोई शंका नहीं है । इसीलिए प्यारे प्रत्येक हरिभक्तो जो यह दिव्य पुस्तिका न खरीदी हो वह अहमदाबाद मंदिर के साहित्य केन्द्र से प्राप्त करले तथा नित्य पठन तथा मनन कर उसकी पूजा करे ।

महंत स्वामी



॥ श्रीहरिः ॥

श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में अधिकमास (पुरुषोत्तमास) धूमधामसे मनाया जायेगा

श्रीहरिके प्यारे भक्तजन ! आप सभी को ज्ञात हो कि इस वर्ष अधिकमास श्रावणमास (पुरुषोत्तमास) ता. १८-७-०४ रविवार के शुभ दिन से प्रारम्भ हो रहा है । प्रति तीन वर्ष में यह पवित्र मास आता है ।

प्यारे भक्तों ! बड़े पुण्य के बाद यह मनुष्य जन्म मिला है । उसमें भी ऐसे सत्संग का योग हुआ है । "उत्सव प्रियाः जनाः" इस उक्ति के अनुसार भगवान का उत्सव हो तो लोगों को प्रिय लगता है । अपने वैष्णव सम्प्रदाय के अनुसार भगवान के मंदिर में विविध प्रकार के उत्सव धूम-धाम से मनाये जाते हैं । सम्पूर्ण वर्ष में आने वाले उत्सव तथा तीन वर्ष में आने वाला अधिक मास का उत्सव मनाया जाता है । तीन वर्ष में आने वाला अधिक मासका उत्सव इस वर्ष आया लेकिन विशेष महत्व की वात तो यह कि पवित्र मास श्रावण मास की प्राप्ति हुई है । अपने उत्सवों के परम्परानुसार अधिकमास में प्रतिदिन अलग-अलग उत्सव अहमदाबाद मंदिर में परमकृपालु भगवान नरनारायण के सांनिध्य में दर्शन होगा । इसके साथ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू. बाल लालजी महाराजश्री तथा धर्मकुल परिवार का दर्शन तो अवश्य होगा ही । इसलिए समस्त सत्संग समाज इस उत्सवके अद्‌भुत दर्शन का दिव्यलाभ लेना न मूळें । विशेष सभी भक्तजन ऐसे दर्शन का महालाभ लेकर बड़भागी बनें ।

लि.

स.गु. महन्त शा.स्वा. निर्गुणदासजीका

श्रीहरि स्मृति के साथ जयश्री स्वामिनारायण

श्री स्वामिनारायण मंदिर

कालुपुर, अहमदाबाद-३८० ००१ • फोन : ०७९-२२१३२१७०.

अधिक पुरुषोत्तम मासका कार्यक्रम

तिथि	ता.	उत्सव	समय
श्रावण शुद-१ रविवार	१८-७-२००४	ग्वालबाल दर्शन	प्रात: ८-१५
श्रावण शुद-२ सोमवार	१९-७-२००४	रथयात्रा	प्रात: ८-१५
श्रावण शुद-३ मंगलवार	२०-७-२००४	श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव	प्रात: ६-१५
श्रावण शुद-४ बुधवार	२१-७-२००४	गणेशचतुर्थी	प्रात: ८-१५
श्रावण शुद-५ गुरुवार	२२-७-२००४	वसंत पंचमी	प्रात: ८-१५
श्रावण शुद-६ शुक्रवार	२३-७-२००४	कुंजगली	प्रात: ८-१५
श्रावण शुद-७ शनिवार	२४-७-२००४	शाकोत्सव	प्रात: ८-१५
श्रावण शुद-८ रविवार	२५-७-२००४	राधाष्टमी	प्रात: ८-१५
श्रावण शुद-९ सोमवार	२६-७-२००४	रामनवमी तथा श्री घनश्याम महाराजका पाटोत्सव एवं जन्मदिन	प्रात: ६-३० अभिषेक प्रात: ८-१५ शृंगार तथा अन्नकूट दर्शन
श्रावण शुद-१० मंगलवार	२७-७-२००४	विजया दशमी	प्रात: ८-१५
श्रावण शुद-११ बुधवार	२८-७-२००४	तुलसी विवाह	प्रात: ८-१५
श्रावण शुद-१२ गुरुवार	२९-७-२००४	वामन द्वादशी रंगमहल घनश्याम महाराजका पाटोत्सव	प्रात: ६-३० अभिषेक प्रात: ८-१५ अन्नकूट दर्शन
श्रावण शुद-१३ शुक्रवार	३०-७-२००४	नृसिंह जयंती	प्रात: ८-१५
श्रावण शुद-१५ शनिवार	३१-७-२००४	श्री हनुमत् पूजन	प्रात: ८-१५
श्रावण कृष्ण-१ रविवार	१-८-२००४	केशर स्नान	प्रात: ६-३०
श्रावण कृष्ण-२ सोमवार	२-८-२००४	फूलका हिंडोला	प्रात: ८-१५
श्रावण कृष्ण-३ मंगळवार	३-८-२००४	चोकलेटका हिंडोला	प्रात: ८-१५
श्रावण कृष्ण-४ बुधवार	४-८-२००४	फुल का हिंडोला	प्रात: ८-१५
श्रावण कृष्ण-५ गुरुवार	५-८-२००४	ड्रायफ्रुट का हिंडोला	प्रात: ८-१५
श्रावण कृष्ण-६ शुक्रवार	६-८-२००४	छपैयाधाम दर्शन	प्रात: ८-१५
श्रावण कृष्ण-७ शनिवार	७-८-२००४	वनविचरण दर्शन	प्रात: ८-१५
श्रावण कृष्ण-८ रविवार	८-८-२००४	जन्माष्टमी	प्रात: ८-१५
श्रावण कृष्ण-९ सोमवार	९-८-२००४	नन्द महोत्सव	प्रात: ८-१५
श्रावण कृष्ण-१० मंगळवार	१०-८-२००४	हिमालय दर्शन	प्रात: ८-१५
श्रावण कृष्ण-११ बुधवार	११-८-२००४	समूह महा पूजा	प्रात: ८-३०
श्रावण कृष्ण-१२ गुरुवार	१२-८-२००४	हिमालय दर्शन	प्रात: ८-१५
श्रावण कृष्ण-१३ शुक्रवार	१३-८-२००४	हिमालय दर्शन - शिवपूजन	प्रात: ८-१५
श्रावण कृष्ण-१४ शनिवार	१४-८-२००४	हिमालय दर्शन	प्रात: ८-१५
श्रावण कृष्ण-३० रविवार	१५-८-२००४	अन्नकूट गोवर्धनपूजा नोंट - मंगलाआरती का दर्शन	प्रात: ८-३० प्रात ६-३० बजे तक
श्रावण कृष्ण-३० सोमवार	१६-८-२००४	विष्णुयाग	प्रात: ८-१५

सुज्ञ प्यारे हरिभक्तों ? कोठार में अपने यजमानपद का नामांकन करालें और पता लिखवादें इसके अलावां इस उत्सव में सम्मिलित होकर अन्य लाभ भी लें ।

नोट : ता. ११-८-२००४ श्रावण कृष्ण-११ के दिन प्रात-८-३० को सभामंडप में प.पू. आचार्य महाराश्रीकी उपस्थितिमें समूह महापूजा का दिव्य लाभ मिलेगा । जो यह लाभ लेना चाहते हैं वे कोठार में १२५-०० रुपये की पहुंच प्राप्त कर सकते है ।

- महंत स्वामी

अमूल्य आचार ग्रन्थ शिक्षापत्री

प्रो. सूर्यकान्त भट्ट (भुज)

ऋतुराजवसंत के प्रिय स्पर्श से निसर्ग खिल उठता है । वसंत तो ठन्ढी एवं गर्मी का सेतु है । माघशुक्ला पंचमी अर्थात वसंतपंचमी वसंत के स्वागत का दिन । आज से करीब १७८ वर्ष पूर्व संवत १८८२ इ.स. १८२६ को वसंत पंचमी के दिन श्री सहजानंन्द स्वामीने गोमतीनदी के किनारे वडताल में ४५ वर्ष की अवस्था में शिक्षापत्री की रचना करने, लोगो का आत्यन्तिक कल्याण करने के लिए यह शुभ संकल्प किया था ।

शिक्षापत्री में आध्यात्मिक सौन्दर्य कूट कूट कर भरा हुआ है गीताजी के तृतीय भाग से भी कम शिक्षापत्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय की स्मृति है । किसी भी सम्प्रदाय का मूल्यांकन उसके साहित्य से किया जाता है । अपने सम्प्रदाय का साहित्य भी ठीक इसी स्तर का है ।

सर्व धर्म समभाव भगवान स्वामिनारायण में था जिसके लिये वे अथक परिश्रम किये । आज उसका अभाव हो गया है जिससे समाज में अशांति, खूनखराबा का प्रभाव बढ गया है । लेकिन हमारा सम्प्रदाय मंदिरो के माध्यम से तथा सत्शास्त्रो के माध्यम से जो रचनात्मक कार्य किये है वह सराहनीय है - शस्त्र कहते है वैसा वर्तन इस सम्प्रदाय का नियम है शिक्षापत्री के माध्यम से श्री हरिने समाज के स्तर को बढाया है । कनैयालाल मुन्शी ने कहा है कि एक समय शैव तथा जैनो के धर्म मे भेद होने के कारण काफी संघर्ष था लेकिन श्रीहरि सम्प्रदाय की स्थापना करके सभी को उत्कर्ष युक्त किया ।

गरीब मनुष्यो के प्रति सहजानन्द स्वामी की अति

दयालुता थी । शिक्षापत्री ६७ श्लोक से स्पष्ट होता है -

अन्नवस्त्रादिभिः सर्वे स्वकीया परिचारकाः ।
सम्भावनीया सततं यथा योग्य यथाधनम् ॥

अर्थात अपने सेवक की अन्न वस्त्रादि द्वारी सम्भावना नित्य करनी चाहिए । जिसे जितने मूल्य पर लगाया जाय उससे कम नहीं देना चाहिए "इस प्रकार आधोगिक क्रान्ति लाये थे । जिससें सामाजिक आर्थिक विकास होना सम्भव था । मजूरवर्ग में समस्याओ का समाधान मिला । अमीर गरीब का भेद दूर हुआ । समाज में मतभेद दूर हुआ । इन सभी विषयो पर सूक्ष्मचिन्तन करके शिक्षापत्री के माध्यम से सभी को अध्यात्म के मार्ग पर लेजाने का प्रयास किये । अपने सत्संगी लोगो द्वारा भी यह आज्ञा पालन करने में आये तो भी क्रमशः विकाश होगा तथा शोषण दूर होगा । इन्ही कई भावनाओंसे दलित समाज का उथात किया जिसमें सारा इतिहास गवाह है ।

जगत के प्रत्येक जीव की चिन्ता श्री सहजानंद स्वामीने किया । अहिंसा का व्रत सदाचार करने की आज्ञा की । अति सूक्ष्म जूं, खटमल इत्यादि की हिंसा पर रोक लगाई । बकरा मृग इत्यादि के मांस की आहुंति या प्रसाद का खूब विरोध किया और शास्त्र प्रमाण प्रस्तुत करके जीव दया की आज्ञा देकर स्पष्टी करण किया समाज में धनपति, अग्रेशर जो बडे तबके के लोग थे उनसे धर्मशाला पानी की परब, होस्पिटल इत्यादि का निर्माण तथा सद्विधा के परिवर्तन हेतु पाठशाला निर्माण करने की बात भी महाराज ने की । शिक्षापत्री के १६७ वें श्लोक में यह भी स्पष्ट किये कि जो विधा खुद पढी हो वही दूसरे को पढाना चाहिए । आज उसी आज्ञा का यथार्थतः पालन देश विदेशो में देखने के लिए मिलता है । शैक्षणिक क्षेत्र में स्वामिनारायण संप्रदाय जगत में प्रथम स्थान पर विधमान है ।

इस मानवजीवन में पंच विषय स्री घाव को सुखाने के लिए शिक्षापत्री अमर औषधि है । तंबाकू, मसाला, गांजा, भांग इत्यादि मादक द्रव्यो का सम्पूर्ण निषेध किया । चोरी जुगार न खेलने की शिक्षापत्री में आज्ञा की । शिक्षापत्री पर सतानंद मुनि ने अर्थदीपिकाटीका रची जो आज शिक्षापत्री भाष्य के स्म में सुविदित है । यह ग्रंन्थ देखकर सहजानन्द स्वामी ने कहा कि जो हमारा अभिप्राय है वह सभी चारो पुस्मार्थ "शिक्षापत्री के अनुसार जो वर्तन करेगा उसे सभी प्राप्त होगा ऐसा सहजानंद स्वामीने शुभाशीष दिया है ।"

जीवन की महक

- प्रो. महादेव धोरियाणी

जीवन तथा जगत, जगत एवं जीवन एक दूसरे अन्योन्याश्रय सम्बन्ध से युक्त है। जीवन बिना जगत तथा जगत बिना जीवन का अस्तित्व होता ही नहीं। जिसका जीवन महकस्म होता है उसकी दृष्टि जीवन के मूल लक्ष्य पर होती है। और वही दुःखो से मुक्त होता है। विषाद तथा जीवन की क्षणभंगुरता मनुष्य को निःशब्द बनादेती है। "तुम महफिल मां तुंझने नोतरजे पण जमजे अश्रुनो थाल एकलो।"

जीवन में ऐसा भी पल आता है कि अन्तर के दीपक को प्रज्वलित करते है। मनुष्य की मधुर मानवता व्यक्तित्व को जागृत करती है। चेतन की अदृश्य अंगुलियाँ हृदय के द्वार को खोलती हैं। इस के साथ मनुष्य को प्रेरणा का पाथेय देती हैं। जीवन सदा कार्यरत रहेगा लेकिन अपनी मानवता की सौरभ चारो तरफ फैले ऐसा चिंतन करते रहना चाहिए। मनुष्य जैसा विचारशील व्यक्ति को उन्नति हेतु सदैव सत्कार्य करते रहना चाहिए।

"सोफ्रेटीस" हर समय अपने साथ दर्पण रखता और वारंवार अपने प्रतिबिंब को देखता रहता। एक मित्रने पूछा तो उसने बताया कि "मैं यह विचार करता हूं कि मेरी कुस्मता एवं वे डोल स्वस्म तथा मानवता को सुधारने के लिये अधिक प्रयास करना होगा। इसी तथ्य का स्मरण करने के लिए वार-वार दर्पण देखता हूँ जिससे कोई अव्यक्त प्रेरणा मिलती है।

मानव की चाहना और तृष्णा उत्तरोत्तर बढती ही रहती है। जीवन में वैभव के उच्च शिखर पर पहुंचने की ललकवनी रहती है। जिसके लिये वह अथक परीश्रम करता रहता है।

जीवन की मंजिल तो काटना है ही। तो अधूरे के साथे नहीं विशाल दिल, भावनात्मक मन, ईश्वरानुभूति के साथ जीवन को व्यतीत करना चाहिए। तभी धर्म और मानवता की महक, जीवन की सौरभ दिगदिगन्त तक फैल सकेगी।

"रोमारोला" के शब्दों में कहा जाय तो "यह दुनिया दुर्जनो की दुर्जनता से पीडित नहीं होती बल्कि उनके कुत्सित विचारों से पीड़ित होती है। सभीलोग सज्जन बने, सज्जन सक्रिय बनें, सक्रिय बनें हुए सज्जन संगठित बने तो बहुत सारी समस्या का समाधान स्वयं हो जायेगा।

ऐसा करने से निराशा के अंधकार में मुर्झाये हुए लोगों के लिये ऐसा ज्ञान का प्रकाश मिलेगा कि उसके सारे रास्ते खुल जायेंगे। मानवता के कार्यो में तन्मय एवं तदाकार बन जांय तो जीवन में ज्ञान प्राप्ति का एक अनोखा अभिगम प्राप्त हो जायेगा। अपूर्णता पूर्णता से भरजाती है और जीवन सुरभिमय बन जाता है। कितने महान व्यक्तियों ने अपनी महक को जगत में फैलाया जिसके स्मरण मात्र से अपने जीवन का परिवर्तन सुगम वन जाता है। और चारो दिशाओं में परिवर्तन की महक फैल जाती है।

आज सत्य कर्तव्य निष्ठा फरज और ईमानदारी का मूल्य ही कहाँ है। ऐसे जीवन का मूल्य ही उसकी महक है। जीवन गतिशील है। मानव स्वप्नशील है। स्वप्न देखना चाहिए हा, परंतु स्वप्नो की सिद्धि को जरूर मानो। संलाचन से वंचित जहाज जिस तरह से सागर के बीच में टकराता है उसी तरह से मनुष्य संसार में टकराता है, परंतु अपने इष्टदेव को याद नहीं करता। आज मनुष्य को जरूरत है सद्भावना, सद्वृत्ति और मानवधर्म की।

कुदरत और मानव का कितना तादात्म्य है। प्राकृतिक सौन्दर्य मनुष्य को अनोखा दर्शन देता है। एक घना वृक्ष मुसाफिर से कहता है कि : "तुम जितनी बार पथ्थर मारोगे उतनी ही बार में उपहार के स्म में फल ही दूंगा पथ्थर का उत्तर पथ्थर से दूंगा तो मैं मानवता भूल जाऊँगा।"

"नित नित उछले छे जींदगीनां मोजां"

जीवनकी सुगंधकी वह लहर, मानवता के सागर में संगीत की लहर दौडानी घटना आवकार्य और ईच्छनीय है। अरे ! वह कैसी सुगंध प्रेम की, फर्ज की निष्ठा की, कर्तव्य भावना की, सत्य की, करुणा की या मीठी मानवता की ?

यहाँ कहने का तात्पर्य वह है कि, जीवन के व्यतीत किए हुए पल तथा स्मृतियाँ हमारे जीवन में संतोष की सुगंध छा जाती है और जीवन ऐसी सुगंध से सभर और सुवासित हो जाए ऐसी ही अभ्यर्थना।

सद्गुरु गोपालानंद स्वामी द्वारा वर्णित श्रीहरिकां सर्वावतारी लक्षण

- प्रो. सूर्यकान्त भट्ट - भुज)

मुमुक्षुभक्तों को आध्यात्मिक प्रश्न उठता रहता है कि श्री सहजानंद स्वामी सर्वावतारी क्यों कहे जाते हैं। इस प्रश्न का उत्तर स.गु. श्री गोपालानंद स्वामीने सर्वावतारी के तेरह लक्षण बताये हैं।

एक समय श्रीजी महाराज नड़ीयाद पधारे थे, उस समय चार अद्वैती विद्वान तथा काशी के सन्यासी महाराज के साथ शास्त्रार्थ करने आये। उन सभी का संकल्प एकमात्र श्रीहरि को हराना था। परन्तु श्रीजी महाराज के ऐश्वर्य को देख कर उनके वशीभूत हो गये। प्रभु की दृष्टि पड़ते ही सभी को समाधी लग गयी। समाधी से छूटे तो भगवान को दंडवत् प्रणाम करने लगे। और बोलने लगे कि अक्षरधाम में अक्षर मुक्तों ने जो आपकी स्तुति की है उसमें आपको सर्वावतारी कहा गया है तो आप कृपा करके सर्वावतारी के लक्षण को कहें। उस समय गोपालानंद स्वामी भगवान की आज्ञा से सर्वावतारी के लक्षण को कहने लगे।

हे पंडितो! इस पृथ्वी पर पहले जितने अवतार हुए हैं उन सभी अवतारों को अपने दिव्यस्म में जो अनेक मनुष्य को दिखाया है। वही श्रीहरि के सर्वावतारी का प्रथम लक्षण है। सौराष्ट्र के कारियाणी गाँव में कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा के उत्सव में श्रीहरिने अपने स्वस्म में से अनंत अवतारों को प्रकट करते हुए तथा अपने में ही विलीन करते हुए भक्तों को दर्शन दिया था।

गोलोक आदि धाम में रहनेवाले श्रीकृष्णादिक दिव्य मूर्ति तथा उस धाम का जो ऐश्वर्य वह इस लोक में अपनी मूर्ति के द्वारा मनुष्यों को जो बताते हैं वही हरि का द्वितीय लक्षण है। झरणा-पारणा गाँव का युवान शीतलदास श्री रामानंद



स्वामी के अवतार को सुनकर फणेणी गाँव में जब आया तब स्वामी को अन्तर्ध्यान हुए तेरह वर्ष बीत गये थे। श्रीहरिने उसे अपना सामर्थ्य बताया था। शीतलदासने समाधीमें रामानंद स्वामी को श्रीहरि का पूजन करते हुए देखा। उसके आनंद की सीमा ही नहीं रही। स्वयं दीक्षा के लिए विन्ती की तो श्रीहरिने उसे दीक्षा देकर व्यापकानंदनाम रखा।

दृष्टिमात्र से साधारण मनुष्य को भी नाड़ी में से प्राण खींचकर जो समाधिस्थ करादे वह सर्वावतारीका तीसरा लक्षण है। मांगरोल में नवाज के काजी को, झींझावदर में पठान को श्रीहरिने अवतार के स्वस्म को बताया था। इस लोक में मनुष्यों को जैसा मोक्षका साधन बताया हैं और जैसी समाधि बताई है। ऐसा ईश्वर श्रीहरि अपने भक्तों द्वारा भी करवाये हैं। मुक्तानंद स्वामी जैसे नंद संतो द्वारा समाधि होती थी यह सर्वावतारी का चौथा लक्षण है।

तेजोमय तथा रमणीय अक्षरधाम में जो अपनी दिव्य मूर्ति है वही मूर्ति इस लोक में साधारण मनुष्यों को कस्णार्द्र हो दर्शन देते हैं। यह सर्वावतारी का पांचवाँ लक्षण है।

गढडा अंत्य के ३१वें वचनामृत में कहते हैं ब्रह्ममय तेजोमय धाम में जो मूर्ति हैं वही मूर्ति आप सभी को यहाँ दृष्ट होती है। जैसे धाम की मूर्ति गुणातीत होती है वैसे ही मनुष्य की मूर्ति भी गुणातीत होती है। जो अपने शास्त्रों में धर्म-ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, वेदांत, सांख्य, इत्यादि को समझने के लिए निस्मण किया है तथा जिसके ग्रन्थ लोगों के लिए विशेष चमत्कृति प्रदान करते है यह सर्वोपरिका छठ्ठा लक्षण है। गढडा अन्त्य के ३९ वें वचनामृत में श्रीजी महाराजने कहा है कि "बुद्धि की कल्पना या बडप्पन के लिए यह बात नहीं करते यह तो यथार्थ हैं। अहमदाबाद के छठ्ठे वचनामृत में स्वयं स्पष्ट कहते हैं कि - इस सत्संग में जो भगवान विराजते हैं उसी भगवान में से सभी अवतार हुआ है।

सातवाँ लक्षण का वर्णन करते हैं - लोहचुंबक का पर्वत जैसे लोहे को

अनुसंधान पेईज नं. १३



सत्संग द्वारा अमृतका आस्वाद

संपादक : गोरधनभाई वी. सीतापरा
(हीरावाडी-बापुनगर)

जब से श्रीहरि के सात वे वंशज भावि नरनारायणदेव पीठाधिपति द्वारा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की स्थापना हुई है . तब से उनके अध्यक्ष स्थान पर ब्रह्मनिष्ठ और निष्ठावान संत मंडल के सानिध्य में कईबार अनेकानेक दिव्य सत्संग सभाओ का आयोजन होता ही रहता है । प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से इन सभाओं में सन्मान स्म हार आदि औपचारिक विधि को अत्यंत गौण बनाकर मात्र सत्संग को ही प्रधानता दी गई है । प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वादसे दृढ निष्ठावाले एक बहुत ही बड़ी संख्या में सत्संगिओं का समुदाय तैयार हुआ है । स्वामिनारायण नाम से लाभ उठाने वाले पाखंडिओं की पोल खुली करने के लिए इस नरनारायणदेव की युवा सेना युवाचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के मार्गदर्शन के नीचे तैयार है । पूरी जींदगी पूरी कर के वृद्धत्व के किनारे आये होने पर भी ऐसा बोलते है 'हमारे लिए तो सब कुछ समान है । हम तो सभी जगह जाते हैं । ऐसे सज्जन तो है परंतु तुच्छ विचारवाले हरिभक्तो ने इस शुद्ध सभा में बैठने का आनंद लेने जैसा है क्या ? क्योंकि अगर पिछली उमंर में भी सिद्धांत समझ आ जाए तो पूरी जींदगी में किया गया सत्संग सार्थक हो जाएगा ।

निष्ठावान हरिभक्तोने षष्ठी पूर्ति महोत्सव में स्वयंसेवको ने खूब श्रद्धा से सेवा की । पूर्णाहुति में प.पू. महाराजश्री ऐसे हरिभक्तों को आशीर्वाद देते-देते गद्‌गद हो गए और जब शब्द कम पड़ने लगे तब ऐसे स्वयंसेवको को श्रीजी महाराज के संपूर्ण आशीर्वाद प्राप्त हो चूके थे । और यादगीरी के स्म में प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों द्वारा लिखे आशीर्वाद स्मी शब्द प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हस्त से सभी स्वयंसेवको को पूर्णाहुति के दिन ही एनायत किया गया था ।

बाकी बचे अलग-अलग समितियों के स्वयं सेवक सभ्यो को ता. ६-६-०४ के दिन महाप्रतापी देव रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के जेतलपुर धाम में बुलाया गया था । महाप्रतापी देव का दर्शन करके प.पू. लालजी महाराजश्री के अध्यक्षस्थान पर, संतो के सानिध्य में प्रसादी के सभामंडप में दिव्य सभा हुई । कीर्तन भक्ति के बाद निष्ठावान हरिभक्त तथा पू. बडे पी.पी. स्वामी, जेतलपुर महंत पू. शा. आत्मप्रकाशदासजी, नारायणपुरा महंत पू. शास्त्री प्रेमस्वस्मदासजी स्वामी, पू. आनंदप्रसादासजी स्वामी, कांकरीया महंत पू. गुस्मसाददासजी स्वामी, नारायमघाट महंत पू. शा. श्री घनश्यामप्रकाशदासजी स्वामी जेतलपुर संस्कृत पाठशाळा संचालक श्रीहरिओमदासजी स्वामी आदि विद्वान संतो के सत्संगलक्षी प्रवचन हुए ।

निष्कुलानंद काव्य को स्वंय श्रीजी महाराज काव्य के स्म में कहते हैं -

सर्वे रीत संतमां रहु छुं रे,
एमां रही उपदेश दउ छुं रे,
संत बोले ते भेलो हुं बोलु रे,
संत न भले हु य न भुलु रे.

ऐसे संतो के मुख से जेतलपुर धाममें जो दिव्य वाणी सुनी, उसका सार यहाँ प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूँ । जिसमें अंक के माध्यम से वाचक वर्ग को घर बैठे-बैठे संत समागम तुल्य लाभ प्राप्त हो जाएगा ।

एक समय भगवान ने नारदमुनि से पूछा, भक्तराज ! अभी आप कहाँ से पधारे है ? कहाँ मुकाम है ? और भगवान ! आप नहीं जानते । अभी तो दो-चार नगरो में बहुत सत्संग करवाया। दो-तीन लाख नए हरिभक्त बनाए । भगवानने कहा ये तो बहुत ही अच्छा है। कैसे भक्त बनवाए ? आपके जैसे पक्के ? नारदजीने कहा महाराज ! नियम, निश्चय, पक्ष, तिलक-चंदन सभी कुछ कम्पलीट है । भगवानने कहा तो फिर हमें तो उन सभी नये हरिभक्तो को दर्शन देना ही पडेगा । हम किसी नदी के किनारे वृक्ष के नीचे बैठे हैं । आपतो सभी भक्तों को जानतें है । नारदमुनि पधारे । सभी भक्तजनो को बता दीजीए कि आप सभी को दर्शन देने के लिए भगवान पधारे है । नगर छोडकर किसी वृक्ष के नीचे भगवान बिराजमान है । वहाँ आप सभी को जाना है । सभी नाचने लगे, चलने लगे, अरे ! भगवान के दर्शन कहां से ? नारद मुनि आगे आकर भगवान से कहने लगे, महाराज ! लाखो की संख्या में हरिभक्त आप के द्रशन के लिए आए हैं । भगवानने कहा, हम भक्तों का पैसो से स्वागत करेंगे । ऐसा कहकर भगवानने रस्ता में धन का भंडार बना दिया । पोने भाग के भक्त धन लेकर अपने घर की ओर चल दिए । पहले धन ले लेतें हैं । भगवानने का दर्शन बाद में होगा ! भगवाने फिर अपनी माया को विस्तृत किया । रास्ते में सोना और चांदी के भंडार खडे कर दिए । बाकी भक्त भी लोभीत हो गए । इतना सारा सोना-चांदी कहां से । सोना कही चला गया तो ? भगवान तो कही नहीं जानेवाले हैं । तीन हरिभक्त आगे बढे । भगवानने और कठिन परीक्षा करने के लिए अपने आस-पास अग्नि की लपटे उत्पन्न की । परंतु यह तीन हरिभक्त सच्चे नीकले । उन्होंने भगवान तक पहुँचने के लिए अग्नि में प्रवेश किया । भगवानने अपनी माया खींच ली । भगवानने इन तीनो हरिभक्तो को लिपटकर दर्शन दिए । नारदमुनि से भगवानने कहा कि भक्तराज ! आपने तो कहा था कि मैंने लाखो मनुष्यों को सच्चे हरिभक्त बनाया है । परंतु आपने केवल तीन हरिभक्तों को ही सच्चा भक्त बनाया है ।

भगवान अपनी ऐसी परीक्षा नहीं लेतें । हमको भगवान सहज प्राप्त हुए है । धर्मकुल की आज्ञा को उल्लंधन नहीं करना चाहिए । न समझ मे आए या न पता चले तो बड़े संतो को पूछना परंतु महाराजश्री या लालजी महाराजश्री समक्ष तत्काल बात नहीं करनी चाहिए ।

भगवान की शरणागति में ही सच्चा सुख है । अति धन में भी ज्यादा सुख नही है । एक किसान के घर महाराज पधारे । वहाँ गाँव में एक बाबा आए हुए थे । लोहे का सोना बनाने की बात करके सबको भरमाता था । किसान भक्तने महाराज से कहा अभी आप सो जाईए । सत्संग सभा बाद में करेंगे । मुझे गाँव में बाबा लोहे का सोना बनाते हैं यह देखना है । महाराजने कहा हम कौन हैं आप जानते है ? हा महाराज, आप भगवान है । जानता हूँ । परंतु बाबा के पास तो जाना पडेगा । महाराज ने कहा, हम लोहे का सोना बना के दें तो ? महाराज आपको भी ऐसा आता है ? महाराजने कहा हमें सब कुछ आता है । लाइए अपने लोहे के औजार ! बाद में महाराजने किसान के लोहे के कोश, हल, खूरपी, त्रीकम आदि औजारों को सोने का बना दिया ! किसान का श्रम खत्म हो गया और वह सोनाकी सुरक्षा की चिंता में जागने लगा । डायाबीटीस, बी.पी. आदि तकलीफें हो गई । पहले परिश्रम करके दो-वक्त की रोटी पचाताथा । अब अलग-अलग दवाईयाँ और परहेज करने का समय आ गया । एक वर्ष बाद महाराज फिर गाँव में आए । तब किसान भक्त विनंती करने लगा, महाराज पहले मैं बहुत खुश था । अब वह सुख नही रहा । महाराजने सोने के औजारो को फिर से लोहे का बनाकर किसान को तृष्णा में से मुक्त किया ।

कई हरिभक्तों को कंठी में संपूर्ण विश्वास नहीं आता इसिलिए रक्षा पोटली, डोडी, कालादोरा आदि कुछ न कुछ हाथ और गले में पहनते हैं । महाराज को अभी तक सर्वोपरि नहींप हचान पाए हैं । हरिभक्तों को अभी तक सर्वोपरि महिमा का अभाव हैं । महिमा ऐसी होना चाहिए ऐसा भाव होना चाहिए की भगवान प्रत्यक्ष मेरे साथ बात करें ऐसी पात्रता तो मेरे में नहीं है। परंतु भगवान के स्वरूप में संत तथा हरिभक्त मेरे साथ बात करतें है इतना भी मेरे लिए ज्यादा कहलाएगा । जेतलपुर के गंगामा का कितना भाव था कि सर पर सगडी रखकर महाराज को गरमागरम भोजन खिलाती थी और मूर्ति द्वारा भी महाराज गंगामा द्वारा बनाया हुआ थाल, दूध आदि का भी ग्रहण करते थे । जब की हम महाराज को बरसों से भोग लगाते हैं तो भी मूर्ति के रूप में प्रत्यक्ष महाराज नहीं खातें ।

संत समुदाय कहता है कि दादा खाचर, पर्वतभाई, जीणाभाई, गोवर्धनभाई आदि पहले के जैसे आज भक्तगण नहीं रहे हैं । हरिभक्त गण कहते है कि आप संतगण पहले के जैसे नहीं

रहें । संत हरिभक्तो को पहले जैसे माने और हरिभक्त संतो को पहले जैसे मानकर संत समागम करें तथा संत-हरिभक्त सभी धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री को श्रीजी महाराज माने तो सत्संग में दिव्य भाव रहता है । और सुख मिलता है । शास्त्रों में सेवा की महिमा के जो शब्द है उसी प्रकार से षष्ठी पूर्ति महोत्सव में स्वयं सेवको ने बहुत ही हर्ष से उसे तादृश्य कर दिखाया । धन्य हैं ऐसे हरिभक्त । सचमुच, सेवा करनेवाले को मान नहीं होता और मान की तलाश करनेवाला सेवा नहीं कर शकता ।

सारे हरिभक्त सभा में एक जैसे ही दिखाई देते है । एक एक हरिभक्त दूसरे दस दस को सभा में ले आओ । आप एक-एक हरिभक्त दूसरे ५०० को नए हरिभक्त बनाईए । इतनी शक्ति आप में हैं ? हमारे पास क्या नहीं है ? देव, आचार्य, संत, शास्त्र सब कुछ है । क्या नहीं है ? मुठ्ठी भर हडी वाले, पोतड़ी पहनने वाले गांधीजीने हिन्दुस्तान में जन्म लेकर कितनी महान शक्तिशाली अंग्रेज सल्तनत को खदेड दिया था । आज तक कितनी ही प्रजाने हिन्दुस्तान पर आक्रमण किया । परंतु हिन्दुस्तान की आर्य संस्कृति आज तक ऐसे ही टीकी हुई है । सिद्धांत और सत्य समांज में प्रस्तुत करने से डरना यह कायरता है । केवल महाराजश्री, लालजी महारजश्री तथा संतो की ही यह फर्ज नहीं है । सच्चे सिद्धांतवाला सत्संग करना ही हरिभक्तों का फर्ज है । महाराज के जमाने में हरिभक्त घर घर घूमकर अन्य के घरों में सत्संग करतें थे । षष्ठी पूर्ति के बाद में हमने जानबूझकर आशीर्वाद पत्र देने में विलंब किया । विचार हुआ कि कोई चिल्ला रहा है ? परंतु आजतक किसी भी स्वयं सेवक सभ्यने आशीर्वाद पत्र के बारे में पृच्छा नहीं की है । लगता है कि आप सभी निर्मानी के अंग वाले हुए है । महाराजने वचनामृत में कहा है कि निर्मानिता का भी अंतर में मान नहीं होना चाहिए ।

अब भगवान के कुल में सातवे वंशज के स्म में प्रगट हुए प.पू. लालजी महाराजश्री के शब्दों का संक्षिप्त सार समझतें है ।

हरिद्वार से ऋषिकेश जा रहें थे । संत भी साथ में थे । गंगा किनारे गंगा नदी में स्नान करने का मन हुआ । घाट पर बहुत भीड होने से आगे जाकर नया घाट खोजा । वहाँ ५-७ बाबा स्नान कर रहें थे । हुआ कि बाबा के साथ कोई तकलीफ नहीं है । हमने संतो के साथ स्नान किया । बाद में हमने संतो से कहा, देखिए यह बाबा त्यागी हुए हैं । घर छोडा है । क्यों ? भगवान को प्राप्त करने के लिए । परंतु उन बाबाओं में से कोई बीडी पी रहें थे कोई चरस पी रहें थे तो कोई चीलम फूंक रहे थें । परंतु अभी तक किसी को भगवान नहीं मिले थे । अथवा भगवान को प्राप्त करने का मार्ग भी उन्हें अभी तक नहीं प्राप्त हुआ था । हमारे ऊपर भगवान की कितनी कृपा है कि साम को लड्डु खाकर सो जाने के बाद भी सुबह को उठकर भगवान के समक्ष खड़ा रहने का सौभाग्य है । परोक्ष मंदिरों में कईबार अभ्यास करने जैसा है । मुख्य स्थान पर जाते-जाते बीच में कई मंदिर आएगे और वहाँ बैठा हुआ पुजारी कहेगा की इस देवी-देव की बहुत महीमा है । यहाँ कुछ रखिए । बिचारे दर्शनार्थी भी उलझन में पड़ जाते है कि इनमें से कौन से देव-देवी वड़े है । जब कि अपने मंदिर में बीच में कोई भी देव-देवी नहीं है । सीधे ही भगवान के समक्ष आकर खड़े हो सकतें है ।

महाराजश्री ने जब जेतलपुर की पदयात्रा की । तब वाडी में एक बहुत सुंदर बात कही थी, याद आता है इसलिए फिर से कहता हूँ । क्योंकि उस समय कुछ लोग सेवा में व्यस्त थे इसलिए किसीने सुनी होगी या किसी ने नहीं सुनी होगी । अमरवेल पेड़ से लीपटी होती है, इस वेल का मूल नहीं होता, फिर भी हंमेशा यह हरी की हरी रहती है । क्योंकि वह पेड़ से लीपटी है । उसी तरह से कई लोग स्वामिनारायण के नाम से ही हरे के हरे ही हैं । एक आता है और दूसरा जाता है ! भगवान बनना किसे नहीं पसंद है । अमरवेल की तरह इस जहाँ को मूल नहीं होता, महाराजने स्थापित किए देव या आचार्य या आचार्य द्वारा दिक्षीत संत या उनसे प्रणित किए हुए शास्त्र उनमें कुछ उनके पास है ? अमरवेल के आधार पर झूला बांधकर कोई झूला खाने जाता है तो ठोकर लगती है परंतु बड की शाखा पर झूला बनाकर मुक्तमन से झूल शकते हैं ।

छोटे थे तब कईबार महाराजश्री को हम पूछते थे, आपको कालुपुर मंदिर पहुंचने में पौने आठ में पाँच मिनिट भी आगे पीछे हो तो नहीं चल शकता ? क्या फर्क पड़ता है ? महाराजश्री उस समय हसते थे, उत्तर नहीं देते थे । बाद में मनोमंथन के अंत में हमको उत्तर मिलता कि महाराजश्रीने देव को, संत को, हरिभक्तो को अपना माना है । सत्संग को अपना परिवार माना है । आप सभी को महाराज सुखी करे इतना कहकर विराम लेता हूँ ।

प.पू. महाराजश्री ने स्वयं सेवको को आशीर्वाद पत्र में आशीर्वाद के साथ

शीख दी है कि,

हम सभी सर्वावतारी श्रीहरि का ही स्वस्म ऐसे श्री नरनारायणदेव के आश्रित है और श्रीजी महाराज को प्रसन्न करने का सरल उपाय श्री नरनारायणदेव का दृढ आश्रय है । यह जीवन पर्यंत और वंशपरंपरागत उनका ही हो कर रहें यही हमारी आपको और आपके परिवार को शीख है ।

कितने अद्‌भुत शब्द हैं । स्वयं सेवक के साथ उनके परिवार की चिंता प.पू. महाराजश्रीको है । क्योंकि आप नरनारायणदेव, के पीठस्थान पर बिराजमान है । आपको और नरनारायणदेव का सीधा मनमिलाप है। हमारा परिवार वंशपरंपरागत आप के शब्दो मर खरा उतरे ऐसा फिर से आप के पास से आशीर्वाद चाहते हैं । क्योंकि हम जानते हैं कि नरनारायणदेव भतखंड के उपास्य देव हैं । सत्‌युग में प्रजा के सुख के लिए सहस्त्रकुंची राक्षस को मारने के लिए नरनारायणदेवने कितने ही वर्षो तक यज्ञ किया । सतयुग से आज पर्यंत नरनारायणदेव भरतखंड की धार्मिक प्रजा के लिए अविरत तप कर रहें है । बाद में उनका आशरा छोडकर अन्य देव का आश्रय करे तो उसके जैसा कृतघ्न कौन ? महान कृतघ्नी लोग मुक्तानंद स्वामी रचित श्रीहरि की आरती में 'नारायण नर भ्राता' शब्द बोलने में शर्म की भीती होने की वजह से 'नारायण मुनि भ्राता' नामका नया मनगढंत शब्द खोज दिया है । आप भगवान के पुत्र होने से आप का हृदय विशाल समुद्र जैसा है । परंतु हमारे हृदय का माप छोटा होने से कभी-कभी श्रीजी महाराज द्वारा स्थापित सिद्धांतो को तोड़ने की चेष्टा करनेवाले मनुष्यो के प्रति दुःख होता है । हमको भी आपके जैसी सहन शक्ति और धैर्य प्राप्त हो इतनी प्रार्थना करके नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना करके वाणी को विराम देता हूँ ।

अनुसंधान पेईज नं. ९ परतुं

आकर्षित करता है वैसे ही असंख्य प्राणिओं के मन को जो केवल अपने दर्शन मात्र से आकर्षित करतें हैं । ध्रांगध्रा के राजकवि और तालुकदार गजो गढवी मेमका में मात्र महाराज की चाल देखकर वे श्रीहरिके चरणो में आ गए थे । पूर्णानंद स्वामी ऐसा नाम श्रीजी महाराजने रखा राजकवि बाहुधनजी श्रीहरि का दर्शन करके कृतार्थ हो गए । ब्रह्मानंद स्वामी का नाम उन्हें श्रीहरि द्वारा प्राप्त हुआ । अपने भक्तों को अंतकाल के बाद दिव्यविमान में बैठाकर अक्षरधाम में ले जातें है यह आठवाँ लक्षण हैं । जिनके वचन के प्रताप से असंख्य पुस्त्रो तथा स्त्रिओंने अपने-अपने धर्म में दृढता प्राप्त की है और ज्ञान, वैराग्य, भक्ति को सिद्ध करतें हैं यह नववां लक्षण है । अपने लक्षण के बारे में स्वामीश्री कहते है कि, "केवल अपने संबंध के द्वारा प्राप्त पुष्प वस्तु वस्त्र आदि के स्पर्श से ही मनुष्य को समाधि करा के धामका ऐश्वर्य बताना याहिए ।" देशान्तर में जाकर भी श्रीहरि की लीला और स्वस्म संबंधी वार्ता जो कोई करता है उसको सुनकर लोगों का समुदाय दिव्य भावका अनुभव करता है। यह उनका ग्यारहवाँ लक्षण है । राजस्थान में झमकुबाने श्रीजी महाराज की दिव्य बांते सुनकर सांख्ययोगी बन गयी थी । मांचाखाचर से एबलाखाचरने श्रीहरिकी बांते सुनकर कृतार्थना का अनुभव किया था ।

बारहवे लक्षण के लिए स्वामी वर्णन करते हैं कि, "जो जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म और परब्रह्म इन पांच भेद के ज्ञान का स्पष्ट निस्मण करता है और इस ज्ञान को अपने भक्तों द्वारा अनेक मनुष्यो में पहुँचाता है वह सर्वावतारी है । गढ़डा प्रथम के सातवे तथा गढ़डा अंत्य के दसवें वचनामृत में इन पांच भेद की तथा शिक्षापत्री श्लोक १०५ में जीव के लक्षण के बारे में श्रीहरि ने स्पष्टता की है ।

अंतिम तेरहवे लक्षण में स्वामीजी कहते है कि, "पृथ्वी पर पहले हो गए सभी अवतारो को अपनी मूर्ति में लीन करने के उपरांत भी स्वयं किसी अवतार में लीन न हो जाना वह सर्वोपरि श्रीजी महाज का एक विलक्षण लक्षण है । श्रीहरि के सर्वोपरिता की तथा सर्वावतारिता की सद्‌गुरु गोपालानंद स्वामीने अनेक दृष्टांत देकर हमको दृढता करवाकर उन्होंने तो श्रीहरि के तेरह असाधारण लक्षणों का वर्णन किया है।

सर्वे अवतार ऐमां समाय, पोते कोई
मां लीन न थाय,
एवी बात करी जेहवार, थया लीन
बधा अवतार
(हरिलीलामृत)

"स्वामीनी बात" में गुणातीतानंद स्वमी सर्वोपरिता और सर्वावतारी के विषय में बात करके उपदेश देते है कि, "महाराज को पुस्त्योत्तम जाने बिना अक्षरधाम में जा नहि सकते ।" श्रीजी महाराजने गढ़डा मध्य में ९ में वचनामृत में कहा कि,

स्वयं को साक्षात् मिला हुआ भगवान के स्वस्म को सदा दिव्य साकारमूर्ति को सर्व अवतार का कारण अवतारी है ऐसा मानना । और ऐसा नहीं समझ पाए या निराकार मानकर दूसरे अवतार जैसा माने तो उसे द्रोह किया कहलाएगा ।"

दृढ निश्चयवाले भक्त की सहायता के लिए प्रभु जरुर आते है।

जयंतीभाई के. सोनी (मेमनगर)

गढड़ा मध्य प्रकरण के १४वे वचनामृत में कहा है कि "भगवान के स्वरूप का निश्चय करके ही निर्गुणता प्राप्त होती है।" भगवान के स्वरूप का ज्ञान जिसको हुआ होता है उसको थोडी भी बुद्धि होतो उसे श्रेष्ठ बुद्धि वाला समझना चाहिए। और जिसके पास ज्यादा ज्ञान न हो उसे ज्यादा बुद्धिमान नहीं समजना चाहिए। इसीलिए भगवान के स्वरूप में पूर्ण निश्चय हो तो भगवान हरकोई स्वरूप में भक्त की महा आफत में रक्षा करते है।

श्रीजी महाराज के समय में विसनगर गाँव में रूराम ठाकर रहते थे। वे श्रीजी महाराज के एकांतिक भक्तराज थे और तीनो अवस्था में श्रीजी महाराज की मूर्ती को देखते, वे वैद्य का कार्य करते थे। एक समय था जब वे गोधरा में रहते थे। वहाँ एक भयंकर रोगवाला मनुष्य मिला उसे औषध देकर ठीक किया। इसलिए रोगातुर मनुष्यने वैद्य को बहुत सा द्रव्य दिया, वह लेकर वे गोधरा से अपने घर जाने के लिए निकले। श्रीजी महाराज का स्मरण करते गोधरा की झाडी मे चलने लगे। संध्या समय हो जानेके कारण झाडी में बहुत अंधकार हो गया था। रस्ता भूल गये। और उल्टी दिशा में चलते समय आगे कोई रस्ता नही दीखा। और घबरा गये। और रूराम ठाकर श्रीजी महाराज को प्रार्थना करने लगे की "हे प्रभु अभी रक्षा करने वाले तो आप ही है, मैं रस्ता भूल गया हूँ। और वन में बाघ, शेर, भालू आदि हिंसक प्राणी आएगें तो मुझे खा जायेंगे। और चोर-लुटेरे का भी बहुत डर है, उन सबसे मेरी रक्षा करिए।" पहले भी आपने भक्तो की रक्षा की है तो आपके अनन्य भक्त जैसा मैं आपकी शरण में हूँ। आपके आलावा इस अंधेरी झाडी में किसे पुकारु, किस से रास्ता पूछूँ? ऐसी हृदयद्रावक प्रार्थना की कि महादयालु महाप्रभु जैसे श्रीजी महाराज उस अंधेरी झाडी में एक सिपाही का वेश धारण करके लकडी हाथ में रखकर रास्ते में खबरदार रहे और कोई लूटे तो कहना इस तरह सरकारी सिपाही के जैसे बोलते हुए रूराम ठाकर जहाँ थे वहाँ आये और पूछा की कौन अंधेरी रात में आया है। रूराम ठाकरने कहा कि जो आना चाहे। तब सिपाही के वेश में महाराज ने सांत्वना देते हुए नजदीक में ही उनकी एक झोपडी में ठाकर को ले गये। और भोजन पानी दिया। और सो जानेके लिए कहा। और थकान उतारने के लिए रूराम ठाकर ने ना कही तो भी उनके चरण दबाए। बाद में श्रीजी महाराज और रूराम ठाकर सो गये। सवेरे ठाकर को जगाकर, उसे मार्ग दिखा कर महाराज अदृश्य हो गए। रूराम ठाकर ने पीछे मुड कर देखा तो न सिपाही था न झोपडी। इस भयावह जंगल में मेरा रक्षण करने वाले केवल श्रीजी महाराज थे। मन में बहुत पश्चाताप हुआ कि मैने उनसे चरण दबवाये। मेरी इस गलती की माफी मुझे गढडा में ही मिल शकती है। ऐसा सोचकर वे घर न जा कर प्रथम गढडा जाने को नीकले और तब श्रीजी महाराज गढपुर की अक्षर ओरडी में थे। वहाँ जाकर दंडवत करने लगे और करते ही रहे। श्रीजी महाराज खडेहो कर रामस्म से मिले और सारी बात बताई। श्रीजी महाराज ने रामस्म ठाकर से कहा कि, मैं आपकी गलती मे आया हूँ। झाडी में आप सिपाही का स्म लेकर आये मेरे पैर दबाए। मै आपसे माफी मांगने आया हूँ। मुजे क्षमा कीजिए। हमारा स्वामी और सेवक का और गुरु-शिष्य का संबंध है। इसलिए आप चिंता न करे आनंद से रहिए। ऐसा कह कर रामस्म ठाकर को भोजन करानेके लिए ब्रह्मचारी से कहा। इसलिए श्रीजी महराज के साथ उन्हो ने भी भोजन किया और गाँव जाने के लिए महाराज ने ठाकर को विदाकिये। इस तरह श्रीजी महाराज पर पूरा भरोसा हो तो महाराज अक्षरधाम तक अपने भक्तो की रक्षा करने और सुख देने के लिए आ जाते है। इसलिए नियम, निश्चय और पक्ष भगवान और भक्तो को रख कर महाराज को प्रसन्न करके आत्यंतिक कल्याण की भेट इस देह से भी प्राप्त करनी चाहीए।



अडिग निष्ठा

हरेश आर. मोदी (हिंमतनगर)

'जय स्वामिनारायण बहन' कोई आगंतुकने आंगन में प्रवेश करते हुए कहा ।

'जय स्वामिनारायण मा'राज, कहाँ रहना है ? घर की चौखट् के पास खड़े रहकर ही बाईने पूछा

'बहन रहतें तो है वडनगर और विसनगर के तरफ देशावर में घूमते-घूमते इस तरफ आ गए हैं । ब्राह्मण को तो भीख मांगना और साथ में किसी का भला हो ऐसा करना होता है । कोई मनुष्य को अच्छी बात करके उसके दुःख में भाग लेना ही ब्राह्मण का काम है ! मा'राजने बात को विस्तारपूर्वक करके कहा ।

अच्छा अच्छा मा'राज कुछ ज्योतिष जानते हो ?''

बहन जिज्ञासा से पूछा ।

''हा बहन मैं ज्योतिष पढ़ा हूँ । जोष देखना मेरा विषय है । मैं अपने अनुभव से कह रहा हूँ कि मेरे द्वारा देखा गया लगभग गलत कभी नहीं पड़ता । आपको कुछ दिखाना है ? दिखाना है तो बोलिए । आप जो कहेंगी वह देख दूंगा'' बरामदे के किनार पर आसन जमाकर बात का ज़ाल बढ़ाने के लिए मौका देखकर मा'राजने अपनी माया को रखने की शुरुआत कर दी ।

बाई : मा'राज के इन वचनो को सुनकर कुछ आशा और श्रद्धा से बात करने लगी । 'महाराज' भगवान की दया से मेरा घर हरा-भरा है । किसी भी बात की कमी नहीं हैं । परंतु घर में बच्चों के आवाज की कमीट है । महाराज ! मेरे नसीब में पुत्र होगा या नहीं ? यह पतानहीं है । बहुत मान्यता मानी, बाधा भी रखी । फिर भी अभी तक कुछ भगवान की कृपा नहीं हुई । तो फिर मुझे बताइए की मेरे नसीब मेंपुत्र हैया नहीं ? बाईने अपनी वेदना व्यक्त की ।

बाई की वेदना देखकर महाराजने ज्योतिष देखना शुरु किया । हाथ की उंगलियों पर गिनती करके थोडी देर के बाद ककडाये और बाद में हाथ को सिंर पर रखकर उदास बनकर बाई के सामने देखकर ऊपर की भौंहे चढाकर कहने लगा ।

बहन मैने तेरा भाग्य देखा है और बहुत दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि तुम्हारे नसीब में पुत्र नहीं है क्योंकि आप पर सनिश्चर ग्रह की दृष्टि बाकी है और वक्र दृष्टि की पनोती भी है ।

बाई के चेहरे के बदलते भाव को पढकर इन्होंने आबाद जाल बिछाकर जितना हो सके उतना लूंटने का दाव खेलने लगे ।

मा'राज पुत्र हो ऐसा कोई उपाय आपके ध्यान में है ? बाईने निराश होकर दीनभाव से कहा । मैं आपको जो चाहिए वह देकर खुश करदूंगी ।

'बहन आपके ग्रह ठीक तो नहीं है परंतु कुछ दान-पुण्य करोगी तो अवश्य कुछ हो जायेगा । हमारे यहाँ तो बहुचरमाता साक्षात है । कई लोगो के घर पुत्र प्राप्ति हुई है । कई लोगों के दुःख दूर हुए है । आप भी माता की आश रखिए जरुर पुत्र पात्र होगा । मैं तो आपके हित की बात कर के बोल रहा हूँ बहन जय स्वामिनारायण ऐसा कहकर लकड़ी लेकर खड़ा होने लगा ।

'मा'राज ऐसे तीव्रता क्यो कर रहे हो ? जरा बैठो तो सही । माता के नैवेद्य और पूजन का क्या खर्च होगा ? दूसरा कुछ करना हो तो कहिएगा ।

अपना पासा उलटा पड़ा जानकर 'मा'राजने एक के बाद एक पासे डालते डालते बताया कि 'देखिये बहन, माताजी को चुंदडी चढ़ाने के लिए कपड़ा चाहिए एक नारियल, सवा शेर सक्कर, सवा पच्चीस रुपए नैवेद्य के और दूसरा तीस रुपयों की सामग्री का खर्च होगा और सोने का छत्र चढाने के लिए भी खर्च होगा ।

जैसा पुण्य करेंगे वैसा ही प्राप्त होगा ।

पुत्र की आशा से बाई कहने लगी, लो ये सवा पच्चीस रुपये नैवेद्य के, ये एकदम नई रेशमी साड़ी माताजी को चुनर चढ़ाने के लिए ।

'बहन आप माताजी को तो बहुत कुछ दे रही हैं परंतु मेरे जैसे गरीब ब्राह्मण को थोडी सी भी भिक्षा नहीं देंगी ? लालची मा'राजने प्रस्ताव रखा ।

लीजिए महाराज के ग्यारह रुपए और सवा मण बाजरी आपके लिए । अब तो खुश हो न । जाईए माताजी को जरुर प्रार्थना करना कि हमको पुत्र प्राप्त हो, उदार होकर बाईने जो चाहिए वह ब्राह्मण को देकर कहा । बहन आपको एक बाधा रखनी होगी । सब कुछ इक्कठ्ठा करते हुए ब्राह्मणने कहा । क्या रखना है ? बाईने आतुरता से पूछा,

पुत्र का जन्म न हो तब तक आप को उड़द नहीं खानी है' ऐसा कहकर वह चल दिया ।

रास्ते में जाते समय ब्राह्मण के मन में हुआ की आज तो मेरा दिन ही सुधर गया । स्वामिनारयण कहीं भी ठगाते नहीं हैं । परंतु यह बाई तो बड़ी भोली थी । ऐसा रोज मिल जाए तो मेरे तो ग्रह ही सीधे हो जायेंगे ।

सौराष्ट्र की गहन गीरी में से पर्वतो की गहराई में वृक्षो के मूल को धोती हुई टेढी-मेढी दिशा कीतरफ आया हुआ मोहीलवाल में प्रवेशती घातरवाडी नदी के आगे मुडकर जहाँ आगेबढ़ती है वहाँ ही अस्त होने की दिशा में देतक के नामक गोकुल का गाँव बसा हुआ है । गाँव में कणबी पटेल की बस्ती है । सभी प्रगट सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण के आश्रित हैं और व्यवहार से खुशी हैं । वहाँ का वातावरण संपूर्ण भक्तिमय है।

इस गाँव के वेकरीया गोपालभाई दोपहर को खाकर घरके बरमादे में विश्राम लेने के लिए लेटे हुऐ थे । ऐसे में एक ब्राह्मण ने बड़े स्वर में 'जय माताजी' कहकर गाँव में आकर खड़ा हो गया । ब्राह्मण को पहचानने के बाद खुशी से बाईने पालने में से पुत्र को उठाकर बरामदे. में आकर खडी रहो गई, बाद में तो कहना ही क्या ! वह तो ब्राह्मण के पास बैठ गई । ब्राह्मण तो माता के चमत्कारो के परचे को गाने लगा । थोडी देर के बाद यह सब देखकर युवानने पूछा, मा'राज कहाँ से आ रहे हो ?

'लीजिए आपको तो पता ही नहीं पूछो मेरी बहन को की मैं मूल वडनगर और विसनगर का हूँ । दो बरस पहले आपके घर आकर माताजी के लिए नैवैद्य लेकर चढाया और आपको पुत्र प्राप्त हुआ है । चुंदरी तो चढा दी है पर माताजी का छत्र तो बाकी है । ब्राह्मण ने आनंद की उमंग से कहा ।

प्रगट भगवान के दृढ निश्चयवाले गोपालभगत को खुद के आंगन में आए हुए ढग ब्राह्मण को देखकर अच्छा नहीं लगा । उन्होने तो अपनी पत्नी को ठगने के कारण उस ठग पर चिल्लाया । यह पुत्र तुम्हारी माता का दिया हुआ है ऐसा ? तुम्हारी माता का दिया हुआ पुत्र मुझे नहीं चाहिए । लो पहले जाओ मेरे स्वामिनारायण का दिया हुआ ही चाहिए । जलदी खड़ा हो, नहीं तो मैं तुझे छोडूंगा नहीं ।

उस मर्द की लाल लाल आंख देखकर ब्राह्मण चकित हो गया । अपनी गोद में पड़े रोते हुए बच्चे की तो उसे चिंता हो गई । उस छोटे से बच्चे को कहाँ ले जाए ? पटेल के क्रोध को देखकर पट्लाणी भी धबराकर कांपने लगी ।

उस समय यहाँ फस जाने की वजह से वह विनंती करने लगा की भला भाई इस बालक को वापस ले ले । ऐसा नहीं होता । आप माताजी को छत्र न चढाए तो कोई बात नहीं, परंतु मैं इसे कहाँ ले जांउँ ? भाईसाहब मुझे कुछ नहीं चाहिए ।

ऐसे शब्द सुनकर टेकीला पटेलसे कहा कि यह पुत्र तुम्हारे स्वामिनाारयण भगवानने दिया है । परंतु मेरी माताने नहीं । ऐसा तुम दस बार कहो तो मैं इसे वापस ले जाऊँगा । ब्राह्मणने हाथ जोडकर दशबार कह दिया की यह पुत्र आपके स्वामिनारायणने दिया है मेरी माताजी ने नहीं दिया । तब जाकर पटेलने पुत्र वापस लिया । और ब्राह्मणने शांति का श्वास लिया । मनमें सोचा कि बाई तो भोली है परंतु भाई तो चुस्त स्वामिनारायण है ।

श्रीहरि की अडिग श्रद्धा और अडिग निष्ठा !

इस अडिग गोपाल भगत के पुत्र का नाम था लक्ष्मणभाई । उसके पुत्र कुरजीभाई भी अच्छे भक्त थे । उनका पुत्र भादाभाई और घुंसाभाई । अभी उनके वंश में बहुत अच्छा सत्संग है । और देतड़ गाँव में स्वामिनारायण का सुंदर मंदिर है । भाव से भगवान की सेवा-पूजा और भजन-भक्ति करतें हैं।

गुरुजीकी अमृतवाणी

- महंत स्वामी भक्तवत्सलदासजी (लींबडी)

श्री स्वामिनारायण भगवानने शिक्षापत्री श्लोक ७४में सुंदर उपदेश दिया है। और श्रीमद् भागवत में ऐसा कहा गया है कि महान पुरुषों के आचरण के अनुसार आचरण करना नहीं चाहिए। उनके उपदेश के अनुसार आचरण करना ही हितकारक है।

संत पुरुषो की महानता श्रीजी महाराजने वचनामृत के पृष्ठ - पृष्ठ पर वर्णित की है। पामर जैसे प्राणी को गुरुके बिना कौन पार उतार शकते है।

साखी

जो नावने न्यल नोय भाई,
तो सिंधुमां नाव जशे तणाई।
दोरी तूटे जाय पतंग जेम,
गुरुबिना जन जाति तेम।

भवसागर उतारने के लिए गुरुजनो की महत्ता विशेष है। इसी लिए बड़े पुरुषो के वचन-आचरणो में उपदेश समाए होंते है। उसमें से बोध लेना चाहिए। आज वर्तमान समय में शिवरात्री के दिन भक्तगण मंदिर जातें है और वहाँ तपेला भर कर बनी हुई भांग पीतें है। फिर साधु लोग कहने लगतें है कि भाई हमको यह नहीं पीना चाहिए। क्यों नही पी सकते आज के दिन तो भगवान भी पीये थे। इसी लिए आपको शंकर भगवान का वाद और साधु पुरुषों का वाद लेना हो तो बंगला छोड़ दो। स्मशान में और मंदिर में अखंड स्म से समय व्यतीत कीजिए। महादेवजी अखंड स्मशान में रहतें हैं। आपको संत और भगवान शंकर का वाद लेना हो तो हाथ घड़ी और गले में से सोने की चेन निकालकर और कहीं से एकाद सर्प निकाल कर पहन कर देखना चाहिए। बड़े पुरुषों का और गुरुजनो का कभी भी वाद लेना नहीं चाहिए।

जगद् गुरुशंकराचार्य अपने शिष्यो के साथ कहीं जाते थे। बहुत ही थक कर अति श्रमित हुए थे। जाते-जाते कोई मदिरा की भट्ठी आई। मदिरा की भट्ठी का संचालन करनेवाला आदमी पैर मे पड गया। मैं आपका क्या स्वागत करु? रोने लगा। मेरे पास तो यही जीज है दूसरा कुछ नहीं है। संत शंकराचार्यने मदिरा में ऊँगली डूबोकर मुँह में छीट दी। बस, अब तू प्रसन्न है? वह प्रसन्न हो गया, परंतु शंकराचार्य के दो-चार-पांच शिष्योने अपनी थैली में से पात्र नीकाले। निकालकर भरकर पीने लगे। क्यों! गुरुने पीया तो अब क्या हर्ज है? शंकराचार्यने देखा कि यह ठीक नहीं है। थोडे आगे चलकर गरम सीसे की भट्ठी आई। सीसा उबल रहा था। गुरु शंकराचार्यने उबलती सीसा की भट्ठी में हाथ डाला और अंजली भर ली। चलो तुम भी उसी तरह से भरो और पीओ। शिष्योने भट्ठी से पांच फूट दूर खडे थे। भट्ठी की गरमी सहन नहीं हो रही थी। गुरुने कहा कि आओ आओ नजदीक आओ। वहाँ क्यों तैयार हो गया? और शिष्यगण पैर पर गिर गए। हमें माफ कर दीजिए गुरुदेव। तो याद रखिए गुरुके आचरण के अनुसार आचरण नहीं करना है परंतु गुरु के उपदेश के अनुसार आचरण करना है। उनकी मरजी के अनुसार चलना है।

साधु-संतो के पास, निर्मान के बिना अपना मान-श्रेष्ठता दूर रखकर अपनी आत्मा का श्रेय कर लें। विहारी लालजी महाराजने सुंदर वर्णन किया है।

जहाँ खासडा संत तणां पडे छे,
त्यां बेसवा मारग जो जडे छे।
माने महा भाग्य तणो प्रकाश,
कल्याणनी जो उर होय आशर।
जो शूलीए संत कदी सुवारे,
तथापि सद्भाग्य सुजाण धारे,
ले संत पासे मुख मांही घास,
कल्याणजी जो उर होय आश।

अनेक सत्शास्त्रो में वेदो, उपनिषदो में जगह-जगह गुरुजनो की महत्ता दर्शाई गई है। हमतो अखंड प्रचलित श्लोक बोलते है गुरुब्रह्मा उसके अनुवाद में ऐसा लिखा है। गुरु ब्रह्मा भी है। गुरु विष्णुस्म है। गुरु साक्षात् देवस्म महेशश्वर है। गुरुसाक्षात् परब्रह्म है। ऐसे श्री गुरुदेव को मैं नमस्कार करता हूँ।

उसके बाद के श्लोक में गुरु की अति महत्ता बताई गई है। इसीलीए तो गुरुपूर्णिमा के दिन सभी धर्मो में गुरु पूजन की विशेषता बताई है। और इस दिन छोटे बड़े सभी गुरुका पूजन करके गुरुऋण में से मुक्त होतें है। यह श्लोक अद्भुत है।

नगुरो रधिकंतत्वं न गुरोरधिकंतपः।
न गुरोरधिकंज्ञानम् तस्मै श्री गुरुवे नमः।

गुरुसे कोई श्रेष्ठ तत्व नहीं है। गुरु से अधिक तप नहीं, और गुरुसे विशेष कोई ज्ञान नहीं है। ऐसे श्री गुरुदेव को मैं नमस्कार करता हूँ।

प्यारे भक्तों ऐसे गुरु के आचरण के अनुसार आचरण नहीं करना चाहिए। उनके बताए हुए मार्ग पर उनका अनुवर्तन करते हुए चलना चाहिए। हमको तो भगवान स्वामिनाारयणने सुंदर देव-आचार्य-संत और शास्त्र दिए हुए हैं। उनकी आज्ञा के अनुसार चल कर गुरुजी की प्रसन्नता प्राप्त हो ऐसी अभ्यर्थना।

स.गु. श्री ब्रह्मानंद स्वामी का जीवन चरित्र



- स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी गुरु स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी (मूलीधाम)

गिरीजा आबु की गोद में शिरोही राज्य में खाण नामक गाँव है। उद्धव संप्रदाय का आश्रित ऐसा भक्त समुदाय वसा है। उसमें भगवान के प्रति अनन्य निष्ठावान, भगवद् परायण, चारणकुल के आभूषण स्म शिरोही राज् के राजकवि श्री आशिया शंभुदान गढवी और उनकी पतिव्रता धर्मपत्नी श्री बालुबा नामक दंपति निवास करतें थे।

दंपति श्री रामानंद स्वामी के मुख्य शिष्य थे स.गु. श्री रामानंद स्वामी जब भी खाण गाँव में पधारते तब इस पवित्र दंपति के घर ठहरते थे।

स.गु. श्री रामानंद स्वामीकी विदाय को दो माह और २४ दिन हुए।

विक्रम संवत १८२८ के महा सुद पांचम (वसंत पंचमी) ता. ८-२-१७७२ को शनिवार का मंगलकारी प्रभात खिला हुआ था।

ऋतुओं की रानी बसंत अपनी अद्‌भुत सुवास फैला रही थी। बुढा के दारेश्वर महादेव के मंदिर में संख ध्वनि होते, नामदेव के मंदिर में आरती के नाद के साख दीपमालाए प्रगटी हुई है। और आकाश में अत्यंत, उज्जवल प्रकाशित तारागण खाण नामके गाँव को प्रकाशित कर रहे थे। एकदम उसी क्षण, शिरोही राज्य के दर्शादि कविराज श्री शंभुदान गढवी के घर, महासती श्री लालुबाने एक अत्यंत तेजस्वी सुपुत्र को जन्म दिया।

"पुत्र के लक्षण पालने में परणीता के लक्षण दरवाजे में" ऐसी पुरानी कहावत के अनुसार श्री लाडुदान अत्यंत चतुर होंशियार और तेजस्वी और कोई दिव्य आत्मा जैसे थे।

मंगलप्रभात के समय जाग कर स्नान और पूजा आदिक विधि पूर्ण करके माता-पिता को प्रणाम करके, गाँव में आई हुई 'घूड शाला' में अभ्यास करते और देव मंदिर में दर्शन करने सदैव जाते। श्री लाडुदान को बचपन से ही काव्य, साखी तथा छंद बनाने का शौख था तथा घोडसवारी का शौख था।

कविपुत्र श्री लाडुदानजी को संगीत के प्रति रुचि होनेकी वजह से वे बचपन से ही दुकड, सरोदा, मृदंग आदिक वाद्ययन्त्रों का प्राथमिक अभ्यास कुलगुरु श्री शिवशंकर महाराज के पास करतें थे।

शिरोही महाराजश्री भर-दरबार के बीच में उन्हें अपनी गोद में बिठाकर साखी बुलवाते थे। काली-घेली परंतु अत्यंत छटादार वाणी सुनकर सभी को आनंद होता।

कविराजश्री लाडुदानजी नित्य नए नए कीर्तन बनाकर श्रीहरि के आगे आकर संतो भक्तो तथा श्रीहरि को प्रसन्न करते थे। दरमियान श्रीहरिने कविराज से कहा "कविराज गढपुर एभल खाचर की दो नवयुवान कुंवारियाँ विवाह के लिए तैयार नहीं है और गाँव वाले जैसी-तैसी बाते कर रहे है। हम से तो रहा नहीं जा रहा। आप गढपुर जा कर लाडुबा और जीवुबा को विवाह करने के लिए समझाइए।

श्रीहरि की आज्ञा से कविराज गढपुर आए। सभीने स्नेह से कविराज

का सन्मान किया । कविराज ने श्रीहरि की आज्ञा बताई । बरामदे में गादी पर कविराज बैठे । कमरे में परदा डाल कर सांख्ययोग धारण करके भगवत् भजन करती हुई दोनो बहने बैठी ।

कविराज अपनी वाक चतुराई से अनंत युक्तिओं द्वारा बहनो को गृहस्थाश्रम स्वीकारने की प्रार्थना करने लगे । परंतु बहनो ने कहा "कविराज" भगवान को भूला दे ऐसे जगत मे आपको क्या माल मनाया है ? संसार की खट्टी छास से अच्छा भगवान संबंधी पकवानो का स्वाद चीखो तो पता चले कि भगवान संबंधी सुख कितना मधुर है । जगत का सुख तो अंत में दुःखदायी और नाशवंत है ।

श्रीहरि के चरण में आकर रोती आंखने प्रार्थना की कि "हे महाराज, श्रीकृष्ण प्रभु ने उद्धवजी को गोपियों के पास ज्ञान देने के लिए नहीं भेजा था उसी तरह आप मुझे ज्ञान लेने के लिए भेजे हैं । इसलिए मेरी अंतर की आखे खुल गई । आप मुझे साधु की दीक्षा दीजिए और अपनी सेवा का अधिकारी बनाइए ।

मंद-मंद हसते हुए श्रीहरिने भगवा वस्त्र हाथ में लिया । और महा कवीश्वर श्री लाडुदानजी को सदा के लिए पहना दिया । भागवती दीक्षा देकर श्री रंगदास नाम दीया । माता को पता चलते ही माताने रोते-रोते कहा "बेटा लोग क्या बातें करेंगे ? इतना पढ़ाकर पुत्र को छोड दिया । दुर्जन के ताने तो सहन कर लेंगे परंतु हमारा क्या होगा । लाडुदान हमारा थोड़ा भी विचार नहीं किया ।

यह सुनकर स्वामीजी बोल उठे "मा आपने कहा कि जहाँ तहाँ भटकना छोड दिया" जहाँ तहाँ नही मा प्रगट भगवान की पहचान करके उनकी शरण में गया है ।

"माँ" अपने रामानंद स्वमी कहते थे कि मैं तो डुगडुगी बजाने वाला हूँ । सचमुच का खेल दिखाने वाले नटवर तो पीछे से ही आएगे ।

वे यही नटवर हैं ।

स्वामी की बात सुनकर सभी ने अति आनंद से हाँ कह दी । "हे लाडुदान जगत ऐसा है तो हम प्रसन्न हैं । और जिस के साथ संबंध तय हुआ था उसने भी जीवनभर ब्रह्मचर्य पालनेकी भगवान को भजने की प्रतिज्ञा ली । भगवान श्रीहरिने सभी के समक्ष वचन दिया कि "कविराज आपके पुत्र को हम अपना जीव मानकर संभालेंगे । आप चिंता मत कीजिए ।"

भगवत परायण जीवन पर्यन्त और नैष्ठिक ब्रह्मचर्य तथा सच्ची साधुता और सत्संग बढ़ाने की खुमारी से ब्रह्मचर्य में मस्त रहतें स्वामी श्री रंगदासजी का श्रीहरिने "श्री ब्रह्मानंद" नाम देकर 'सद्गुरु पद अर्पण किया।

सद्गुरु श्री ब्रह्मानंद स्वामी नित्य कीर्तनो की धारा बहाकर श्रीहरि को प्रसन्न करते ।

"इस ब्रह्मानंद स्वामी ने सत्संग की मर्यादा का किसी भी तरह से भंग नहीं होने दिया ।

श्रीहरि का वचन है कि "सद्गुरु ब्रह्मानंद स्वामी द्वारा रचित १०० कीर्तन नित्य जो गाएगा उसे मैं प्रत्यक्ष दर्शन दूंगा । ऐसा वरदान दिया ।

स्वामी मूली में बिराजमान थे उस समय एक दिन कोई बाबाजी गाँव में आए । चारण था में आए हुए ऊपर जाकर संत-महिमा गाने लगे । तब वहाँ बैठे हुए वृद्धोने कहा कि ऐसे संत तो ब्रह्मानंद स्वामी है जिन्होनें इस गाँव में बड़ा मंदिर बनवाया है और अभी मंदिर का बाकी काम भी पूरा करवा रहें हैं । वे दर्शन करने योग्य संत है । चलो चलते है ।"

सभी मंदिर में आए, विशाल मंदिर देखकर बावाजी चकित हो गए । स्वामी के दर्शन होने के साथ ही बाबाजी को स्वामी के प्रति पूज्यबुद्धि हुई । वंदन करके स्वामी से कहा "आप इतना विशाल बांधकाम कर रहे हो तो उसमें धन की जरूरत पड़ती होगी इसीलिए मैं आपको एक जड़ीबुटी दे रहा हूँ । उसे आप जिस धातु से भी स्पर्श करें गे वह सोने की हो जाएगी । यह सुनकर स्वामी तुरंत खड़े हो गए । अपना खेस दूर पडे हुए स्तंभ पर डालकर कहा, इस कपडे को लेलीजिए बाबाजी । बाबाजीने कपड़ा ले लिया तो पूरा स्तंभ सोने का हो गया ।

स्वामी बोले "महात्माजी, हम चाहे तो पुरा मंदिर सोने का हो जाए । परंतु सभी भक्तोके मेहनत करके पाए पैसे उपयोग में लेने है और उनका अंत अच्छा हो इसीलिए हम ऐसा नहीं चाहतें ।

यह सुनकर बाबाजी तो स्वामी के चरणमें गिरकर वंदन करने लगा । ऐसे महान गुरुवर्य के चरण कमल में कोटी-कोटी वंदन ।

(मूलीधाम दर्शन में से साभार)

सत्संग बालवाटिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

जीव बचाना शीखवो

- शास्त्री हरि स्वामी (गांधीनगर)

एक बड़ा नगर था । उस नगर में लक्ष्मीचंन्द्र नामका एक शेठ रहता था । शेठ की बड़ी-बड़ी फैक्टरी चलती थी, अच्छा खाशा धन्धा चलता था खूब बड़ी संख्या में नौकरचाकर थे । शेठ खूब सुखी था । शेठ का बंगला तो देखते ही बनता था । प्रत्येक रूम अद्यतन सामग्री से भरपूर था । पूराघर भराभरा था । शेठ का स्वभाव भी अच्छा था । जरूरत पड़ने पर शेठ दान-धर्मभी करता था। उसकी कीमत उस का व्यवहार भी अच्छा था ।

लेकिन "सब दिन एक हि ते नहिं जात" न जाने जानकी नाथे सवारे शुं थवानुं छे" ऐसे एक दिन अचानक ही शेठ के घर में आग लग गयी । दौड़धाम मचगयी । खुद शेठ दौड़कर बाहर आया और भी घर के सदस्य बाहर आ गये । चारो तरफ हाहाकार मच गया । अगल बगल के लोग इकठ्ठा हो गये । घर की बहुत सारी सामान बाहर निकाल ली गयी । लेकिन थोड़ी ही देर में देखते-देखते सम्पूर्ण मकान आग की लपेट में आ गया । स्वयं शेठ बाहर खड़े खड़े अपनी सजाई गयी धरो हर को आग में जलते देख रहा था । लोगो ने शेठ से पूछा कि शेठजी बहुत सारी सामान तो निकाल ली गयी है, कोई और तो भीतर रह नहीं गया ? शेठ बड़े ध्यान



से देखातो वस्तु प्रायः सभी बाहर निकाल ली गयी थी घर के सदस्य भी बाहर निकल आये थे लेकिन लोगों कि दृष्टि एक छोटे बच्चे पर आई कि वह तो दिखाई नहीं दे रहा हैं । लोगो ने दौड़धाम खूब की लेकिन उस बच्चे का अता पता नहीं चला ।

अन्त में खोजने के बाद यह ख्याल आया कि उस छोटे बालक को भीतर ही सुता दिये थे और उस बालक को लाना भूल गये । सामान निकालना नहीं भूले । उस सामान को देखकर अब रोने के अलांवा कोई रास्ता नहीं रहा । पुक्काफाड कर रोते हुए कहने लगा कि मैं छोटी सी कीमती सामान को बाहर निकालनें में लगा रहा लेकिन जिसके लिये यह दौड़धाम करके सामान बचाया अब वही नहीं रहा । अब यह सामान किसके लिये ?

प्रिय मित्रो ! आपको ऐसा लग नहीं रहा कि इस संसार में चारो तरफ आग लगी हुई है - असंतोष की आग, विलास-वासना की आग, रागद्वेष की आग, इन सभी आगों में से जगत के जीव माल मिल्कत बचाने में लगे हैं । नाना प्राकर की अभिलाषाओं तथा इच्छाओं को बचाने में लगे हैं । सुख-सुविधा को बचाने मे लगे है । लेकिन जिसे बचाना चाहिए उस जीव को बचाना भूल जाते हैं । इसलिए सदा सावधान रहकर सुलगते इस संसार में अनपे जीवन को बचालेना चाहिए । सत्संग तथा भक्ति उपासना से जीव बच सकता है । इसलिए स्वामिनारायण भगवान की भक्ति करनी चाहिए । अन्य जगत के वस्तु का जो होता हो, हो । अपने सन्त लोग भी कहते हैं कि करोड़ो काम विगाड़ करके भी अपना मोक्ष सुधारलेना चाहिए ।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव युवक मंडळ का मुख्यकार्यालय

भावी आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री की प्रेरणा मार्गदर्शनसे कुछ वर्षो से शहर तथा प्रत्येक गाँव और विदेशो में भी श्री नरनारायणदेव युवक मंडळ खूंब सक्रिय और कार्यरत है। अपने प्रत्येक छोटे-बडे उत्सवकी जिम्मेदारी युवक मंडल पर होती है। अब कार्यालय का प्रत्येक कार्य अहमदाबाद मंदिर के मुख्य कार्यालय से होगा। इसलिए प्रत्येक युवक मंडल के संचालक याद रखे।

- श्री नरनारायणदवे युवक मंडल

नारायणघाट मंदिर में सुवर्ण सुरवशैयाका उद्घाटन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद तथा आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज के शयनार्थ सुंदर सुवर्ण से मढ कर सुखशैया तैयार की गई। जिसका उद्घाटन प.पू. लालजी महाराजके कर कमलो से संपन्न हुआ। इस अवशर पर पोढे "प्रभु सकल मुनि के श्याम" के पद पर स.शा. स्वामी पूज्य श्री हरिकेशवदाजी ने विवेचन सहति सुंदर वक्तव्य भी दिया था। जिसे सुन कर श्रोतागण बहुत भाव-विभोर हो गए थे। सभा में प.पू. लालजी महाराज का आगमन होते ही श्री दिनेश वघासीयाने कीर्तन गाया "तेरी सांवरी सुंदर छटादार" यह भाव से परिपूर्ण कीर्तन को सुनकर धर्मकुल की प्रेमी समस्त सभा आनंद में डूब गई। अंदाजित डेढ हजार भक्तोने प्रसाद का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किया था। सभा का संचालन महंत स्वामी घनश्याम स्वामीने किया था।

पवित्र अधिक मास में नारायणघाट मंदिर में भव्य हिंडोला दर्शन तथा कथा श्रवण

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के प्राकट्य से तीर्थोत्तम बना हुआ साबरमती का किनारा तथा नंदसंतो के चरणकमल से पुनःपुन- प्रसादीस्म बनी नारायणघाट की पवित्र भूमि तीर्थराज बन गयी है। नारायणघाट शहर के बीच होने के बावजूद शहरीकरण जिसका स्पर्श भी नही कर पाया है। सत्संगीभूषण में इस तीर्थ की महिमा बतायी गयी है। यहाँ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद तथा आज्ञा से तथा देवप्रसाददासजी के मार्दर्शन से तथा श्री न.ना.यु.मं. के हरिभक्तो के सहयोग से भव्य हिंडोला के दर्शन का आयोजन किया है। जिसमें वक्ता स्थान पर पूर्णप्रकाशदासजी (जमीयतपुरा) कथा करेंगे तो भक्तो को कथा तथा हिंडोला का लाभ लेने हेतु पधारनेका भाव पूर्वक आमंत्रण है।

- म.स्वा. घनश्यामप्रकाशदास

कार्यक्रम : कथा श्रवण दि. २१-७-०४ से ३१-८-०४ तक शाम को ५-३० से ६-४५ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो से हींडोला तथा हिमालय दर्शन खुल्ला रखा जायेगा। और हिंडोला का दर्शन दि. १८-८-०४ से ३१-८-०४ पर्यन्त होंगा। *श्री स्वा. मं. नारायणघाट*

हर्षद कोलोनी बापुनगर (बहनो का मंदिर)

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री के आशीर्वाद तथा आत्रा से श्रीहरि की अंदर्ध्यान तिथी ज्येष्ठ शुक्ल-१० को सुबह ७ से शाम के ७ बजे तक स्वामिनारायण महामंत्र की धून का आयोजन किया गया था। जिस में असंख्य बहने उपस्थित रही थी।

- प्रति. गोरधनभाई सीतापरा

धोलका की सत्संग सभा में

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के षष्ठी पूर्ति महोत्सव के समापन के बाद संकल्प और दृढ निश्चय से श्री न.ना.देव युवक मंडल के प्रत्येक युवक मंडल के सभ्य महन्त जगतप्रकाशदास की प्रेरणा से प्रति रविवार को सत्संग सभा की जाती है।

अप्रैल में तथा मई मास में भायला मंदिर में (४० हरिभक्तों) सिमेजमंदिर में (५० हरिभक्तों): को परिया मंदिर में (७० हरिभक्तों) सांकोदरा मंदिर में (६० हरिभक्तों) कोठ मंदिर में (१५०) चिलोडा में (५०) हरिभक्त धुन कीर्तन किये। यहाँ प्रति एकादशी को धुनकीर्तन होता रहता है। यहाँ पर सत्संग व्यापक बनें इसके लिए लालजी महाराजश्री से प्रार्थना की गयी है।

- राकेशभाई एच. सोनी - धोलका

हरिद्वार मंदिर में भागवत पारायण

प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से को. स्वा. स्वयंप्रकादासजी की प्रेरणा से प.भ. मुकुन्दभाई लालजीभाई सोनी के यजमान पद पर श्रीहरि की प्रसन्नता हेतु पितृऋण पूरा करने के लिये भागीरथी के तट पर ता. २८-४-०४ से ३-६-०४ तक श्रीमद्भागवत की कथा हुई। महंत स्वा. विश्वप्रकाशदास के वक्ता पद पर यह कथा सम्पन्न हुई। संहितापाठ विश्ववल्लभ स्वामीने किया। स्वा. पूर्णप्रकाशदासजी भी उपस्थित रहे। अन्य सन्तों ने भी भाग लिया। यहाँ पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से मंदिर का कार्य उत्तम ढंग से पूर्ण हुआ है। थोडे समय में मन्दिर की प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न होगी। पारायण का यजमान परिवार विजयभाई परेशभाई इत्यादि लोगो ने स्थानिक महामंडलेश्वर को आमंत्रित किया था। प.पू. लालजी महाराज उपस्थित होकर सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। को. सत्यप्रकाशदास, स्वा. हरिकृष्णदास, स्वा. देवप्रकाशदासी,

श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण परीक्षा के बारे में

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग कुछ वर्षो से धार्मिक परीक्षा द्वारा सत्संग की भावी पेढी को तैयार कर रहे है। यह परीक्षा प्रति वर्ष होती है। इस वर्ष वि. ११-१२-२००४ रविवार को प्रत्येक केन्द्र पर नियमानुसार ली जायेगी। तो प्रत्येक केन्द्र संचालको को उनके विस्तार के बच्चो, युवान भाई-बहन के नामका लिस्ट बना कर यहाँ से फोर्म ले कर जल्दी वापस भर देंना। प्रत्येक विभाग की पुस्तक अहमदाबाद साहित्य केन्द्र से मिलेगी इसलिए प्रत्येक केन्द्र संचालक परीक्षा के बारेमें विशेष जानकारी केलिए तथा फोर्म प्राप्त करने के लिए इस पते पर संपर्क करे।

श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद (सभामंडप)
समय : सुबह के ८ से १०-३०

विष्णुस्वामी, नाना पी.पी. स्वामी, स्वामी कृष्णवल्लभदासज, श्रीजी स्वस्म, प्रभु स्वामी, स्वा. गोलोकविहारीदास आदि संत पधारे थे।

- दास स्वामी तथा वल्लभ भगत

ईडर मंदिर का १५८ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से ईडर मंदिर का १५८ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया। पवित्र ब्राह्म मुहूर्त में भगवान गोपीनाथ श्री हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक हुआ। पाटोत्सव के यजमान डाह्याभाई पटेल थे।

प.पू. भावी आचार्य लालजी महाराजश्री छपैया, लखनउ, दिल्ही, मुंबई होते हुए यहाँ ईडर मंदिर में पधारे थे और अन्नकूट की आरती उतारे थे। यजमान परिवार प.पू. लालजी महाराज की आरती उतारी थी। इस प्रसंग पर शा.स्वा. हरिकेशवदासजी, प्रेरणादायक प्रवचन किये थे। लालोडा, धोलका, टोरडा, नारायणघाट, सोकली, गान्धीनगर, हाथीजण इत्यादि स्थलों से संत पधारे थे। प.पू. लालजी महाराज स्वा. जगदीशकी सेवा से खूब प्रसन्न हुए थे।

अंत में पू. लालजी महाराजने सभी को आशीर्वाद दिया था।

- सत्यसंकल्पदास ईडर

वडनगर मंदिर में घनश्याम महाराज का ४३वाँ पाटोत्सव

श्रीहरिकी कृपा से वडनगर स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान घनश्याम महाराज का ४३वाँ पाटोतसव बडे धूमधाम से मनाया गया। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वा. हरिसेवादासजी की प्रेरणा से यह कार्य सम्पन्न हुआ।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष-१२ ता. १४-६-०४ के दिन प्रातः ७-३० बजे प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से वेद विधि से घनश्याम महाराज का महाअभिषेक सम्पन्न हुए। लालजी महाराजने आरती उतारी और सभा मंडप में विराजमान हुए। सभा में शा. नारायणवल्लभदासजीने मंदिर के इतिहास को बताया। को.स्वा. विश्वप्रकाशदासजीने श्रीहरि का चरित्र बताया। ट्रस्टी नवीनभाईने धर्मकुल की महिमा का वर्णन किया। प.पू. लालजी महाराज सभी को आशीर्वाद दिया। बाद में श्रीसहजानंद गुरुकुल में श्रीहरि की चित्रप्रतिमा की प्रतिष्ठा कर विद्यार्थियों को आशीर्वाद दिये। *- विश्वप्रकाशदास*

अरोणा मंदिर में पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा ईडर मंदिर के महंत जगदीश स्वामी की प्रेरणा सेनवा अरोडा में ज्येष्ठ शुक्ल-५ को यजमान श्री डाह्याभाई नाथजीभाई पटेल महापूजा तथा पाटोत्सव का लाभ लिये थे। गाँव का सत्संग समाज दर्शन का लाभ लिया।

नवा अरोडा में पटेल मुकेशभाई कोदरभाई के यजमान पदपर अभिषेक महापूजा सम्पन्न हुई हरिजीवन स्वामी महापूजा करवाये अन्य लोगोने इसका लाभ लिया। *- सा.सत्यसंकल्पदासजी*

कालियाणा (ता. विरमगाँव) मंदिर

कालियाणा श्री स्वामिनारायण मंदिर में ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-१० के दिन श्रीहरिअंन्तर्ध्यान के निमित्त सत्संग सभा, ध्यान, कीर्तन, स्वामी नारायणमंत्र की धुन सम्पन्न हुई। जिसमें प.भ. भीखुभाई जेठुभाई इत्यादि हरिभक्त सामिल थे। अन्य ग्रामजन लोगोने इसका लाभ लिया।

- हीराभाई भगवानभाई मोरी

वहेलाल मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से चैतन्य मुनि स्वामी की प्रेरणा से ज्येष्ठ शुक्ल-१० के दिन श्रीजी महाराज के अन्तर्ध्यान तिथी के निमित्त रात्रि में ८ से ११ बजे तक कीर्तन धुन का हरिभक्त भी उपस्थित होकर लाभ लिया थे।

- गोरधनभाई सीतापरा

हर्षदकोलोनी (बापूनगर) मंदिर में पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से हर्षद कोलोनी (बापुनगर) मंदिर का २० वाँ वार्षिक पाटोत्सव रथयात्रा के पवित्र दिन पर मनाया गया। इस अवसर पर सुबह ६ से १० तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून की गई थी। जिसकी पूर्णाहुति पर प.पू. लालजी महाराजश्री ने संत मंडल के साथ आकर ठाकुरजी की आरती उतारी थी। फिर प्रासंगिक प्रवचन में छोटे पी.पी. स्वामी, छपैयाप्रसाद स्वामी आदि संतोने

प्रेरणात्मक प्रवचन किए तत्पश्चात लालजी महाराजने समस्त सभा को आशीर्वाद दिये थे। - *गोरधनभाई सीतापरा*

स्त्रिोल (ता. माणसा) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा

श्रीहरि के दिव्य चरणो से अंकित इस गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से गाँव के प.भ. विठ्ठलभाई, श्री केशवलाल, श्री कनुभाई, श्री विष्णुभाई आदि के सहकार से सुंदर मंदिर का निर्माण किया गया। इस गाँव में श्रीहरि मूळजी ब्रह्मचारी के साथ बाटी पकाइ कर खाये थे। एसी अलौकिक लीला इस गाँव में हुई है। मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में श्री सत्संगी जीवन पंचाह्न पारायण, महा विष्णुयाग और महापूजा का आयोजन किया गया था। कथा के वक्ता पद पर स.गु. शा.स्वा. प्रेमस्वरूपदासजी (नारायणपुरा महंत) रहे थे। स्वा. घनश्यामस्वरूपदासजी संहिता पाठ पर रहे थे।

दि. २-५-०४ को प.पू. आचार्य महाराजश्री गाँव में पधारे तब एक अद्‌भुत शोभायात्राका आयोजन किया गया था। संतो हरिभक्तोने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का प्रेमपूर्वक स्वागत किया था। शोभायात्रा मंदिर में आयी तब महाराजश्रीने कर कमलो से मूर्ति प्रतिष्ठा की। फिर प्रासंगिक प्रवचन शा.स्वा. हरिकृष्णदासजीने किया था।

स.गु. देवप्रकाशदासजीने रसोई तथा अन्नकूट की सेवा की थी। छोटे पी.पी. स्वामीने सभा संचालन किया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वचन देते हुए कहा था कि इस पवित्र भूमि पर मंदिर बनाने का संकल्प पूर्ण हुआ। गाँव का सत्संग दिन प्रतिदिन बढता रहे ऐसी नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना। - *स्वामी प्रेमस्वरूपदासजी*

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

नसीतपर

मूली श्री राधाकृष्णदेव ताबा के मालीया तालुका के नसीतपर गाँव में भूकंप में मंदिर नष्ट हो गया था। जिसका पुनः निर्माण प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से और स.गु. कोठारी स्वमी स्वयंप्रकाशदासजी और स्वामी नरनारायणदासजी की प्रेरणा से पुनः निर्माण साकार हुआ। इस मंदिर के मार्गदर्शक के रूप में महंत सा. स्वामी विश्वप्रकाशदासजी, शा. स्वामी पूर्णप्रकाशदासजी है।

मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष में १८-५-२००४ से २०-५-२००४ पर्यन्त श्रीमद् भागवत सप्ताह वक्तापद पर स.गु.शा. स्वा. विश्वप्रकाशदासजीने अपनी शैली में कथामृत पान करवाया था। ता. २१-५-०४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री वहाँ पधारे थे और वहाँ संत हरिभक्तो के साथ चार कि.मी. की शोभायात्रा नीकली थी।

१४० जीतनी गाय प.पू. महाराजश्री की गाडी के आगे दोड़ रही थी। गायो के मालिक उनको वहाँ से हटाने के सभी प्रयत्न निष्फल गए थे। सचमुच मूक पशुओं को भी पता है यही हमारे परमात्मा है। शोभायात्रा मंदिर पर आई उसके बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने मंदिर में अपने वरद् हस्त से मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा की थी। उसके बाद श्रीफल डालकर यज्ञ की पूर्णाहूति करके सभा में पधारे थे। सभा में शिक्षण तथा संस्कार के बारे में दो मंदिरो ने विचार प्रस्तुत किये थे। संस्कार का केन्द्र माता शारदादेवी का मंदिर है। यह दोनो विशिष्ट उत्सव है। मूली महंत शा. मुकुन्दप्रसाददासजीने मंदिर निर्माण में प्रेरणात्मक सेवा की थी। कोठारी घनश्यामभगत का भी सुदंर योगदान मिला था।

इस प्रसंग में शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी (छपैया भूतपूर्व महंत) स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी, विष्णु स्वामी, नाना पी.पी. स्वामी, कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी, शा. स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजी आदि संतमंडल पधारे थे।

अहमदाबाद से प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरूपा गादीवालाश्री बहनो को दर्शन आशीर्वाद देने के लिए पधारे थे। पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू. भावि आचार्य लालजी महाराजश्री पधारे थे उनके वरद् हस्त से नूतन मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा की। उसके बाद ज्ञानयज्ञ की पूर्णाहुति करके गाँव में हाईस्कूल का भूमि पूजन किया था। प्रासंगिक सभा में आशीर्वाद देते हुए कहा कि इस स्कूल का काम श्री नरनारायणदेव की ईच्छा से टूंक समय में ही पूरा हो जाएगा। और सभा में ही प.पू. लालजी महाराजश्री की कृपा से २८,७१००० जितीनी मातबर रकम शिक्षण प्रेमीओं की तरफ से दी गई। यह सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव की कृपा का फल है। इस प्रसंग का आनंद भूतपूर्व मुख्यमंत्रीश्री केशुभाई पटेल, अन्य सांसदो के साथ पधारे थे। गाँव के प्रतिनिधि के रूप में रमेशभाई मगनभाई (सोना सिरामीक वाले) भुराभाई जेरामभाई कणसागरा और हिरालाल भगवानजीभाई जेरामभाई परिवार आदि भक्तजनो ने पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद प्राप्त किए ते। सभा संचालन शा.स्वा. पूर्णप्रकाशदासजीने संभाला था।

- *अचलप्रकाश तथा समीर भगत*

लींबडी मंदिर (बहनो का)

बाईओ का श्री स्वामिनारायण मंदिर में अ.सौ.प.पू. लक्ष्मीस्वरूपा गादीवालाश्री की आज्ञा से श्रीजी महिला मंडल प्रत्येक

एकादशी और पूनम के दिन सत्संग सभा धून, कीर्तनका आयोजन करती हैं। १५० जितनी बहन ने इस में भाग लेती है।

- रमाबहन और कमलाबहन सोनी

चराडवा श्री स्वामिनारायण मंदिर

जेठ सुद-१५ को समूह महापूजा का आयोजन प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से और महंत स्वामी विष्णुचरणदासजी की प्रेरणा से किया गया था। जिस में गाँव के और बाहरगाँव के कई हरिभक्त आए थे। तथा ठाकोरजी को नित्य चंदन के सुंदर वस्त्र धारण करवाए जाते थे। पूनम के दिन अभिषेक किया गाय था। रोज बालसभा और युवा सभा किया जाता है। सभी को सत्संग का सुंदर लाभ मिलता है।

- श्री न.ना.देव युवक मंडल, चराडवा

विदेश सत्संग वृत्तान्त

बुवी मेरीलेन्ड (वोशिंग्टन I.S.S.O., U.S.A. चेप्टर)

८ में के शनिवार के शाम के समय तीन घंटी भजन-कीर्तन और वचनामृत वाचन आदि समूह में किया गया था। कई हरिभक्तो ने सभा का लाभ लिया था। प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग अच्छा चल रहा था।

- कनुभाई पटेल

अपनी शैक्षणिक संस्थाओं का समाचार

ध.धु. आचार्यश्री देवेन्द्रप्रसादजी शिक्षम ट्रस्ट संचालित

श्री सहजानंद सेकेन्डरी और हायर सेकन्डरी स्कूल का मार्च २००४ का एस.एस.सी./एच.एस.सी. बोर्ड का परिणाम नीचे दिया गाय है।

एस.एस.सी. परिणाम	एच.एच.सी. परिणाम
परिणाम :९९.२१%	परिणाम : ९८-८९%
डीस्ट्रीकशन - ७७	डीस्ट्रीक्शन - ३२
प्रथम वग - ४१	प्रथम वर्ग - २८
द्वितीय वर्ग - ०८	द्वितीय वर्ग - २६
तृतीय वर्ग - ०१	तृतीय वर्ग - १
प्रथम : स्मारेल नकुलजी -९१.१४%	प्रथम जयस्वाल कृपेश - ८२.६७%

- प्रिन्सीपाल गढवी साहब

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान संचालित स्कूल और गुरुकुलो को कक्षा-१० का परिणाम

गुजरात राज्य माध्यमिक शिक्षणबोर्ड द्वारा ईस वर्ष ली गई कक्षा-१० का परिणाम नीचे अनुसार है।

श्री सहजानंद गुरुकुल माउन्ट आबु (राज.) धो.१० अंग्रेजी मीडियम १००%, श्री स्वामिनारायण सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर ९८%, जेतलपुर धो-१० १००% (गुजराती मीडियम), श्री सहजानंद असारवा ८७%, परिणाम प्राप्त हुआ है (अपनी अन्य स्कूल-गुरुकुलों का परिणाण प्राप्त न होने के कारण प्रसिद्ध नहीं हुआ है)

राजस्थान माद्यमिक शिक्षणबोर्ड माऊन्ट आबु द्वारा ली गई (अंग्रेजी मीडीयम गुरुकुल सी.बी. एस.सी. कोड) श्री सहजानंद गुरुकुल में अभ्यास करते स्वामी हरिवल्लभदास गुरु पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) कक्षा-१० में अंग्रेजी मिडीयममें बहुत अच्छा अभ्यास करके पुरुषार्थ द्वारा ७१% प्राप्त करके सुंदर उदाहरण दिया है।

अक्षरनिवासी संत - हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

अहमदाबाद मंदिर : श्री स्वामिनारायण मंदिर के वयोवृद्द तपोवृद्ध पू. सगु. शा.स्वा. श्रीकेशवचरणदासजी दि. २१-६-०४को श्रीहरिका अखंड स्मरण करके अक्षरनिवासी हो गए।

अहमदाबाद मंदिर : प.भ. पार्षद श्री माधाभगत गुरु श्री माधवसिंहजी भगत हजुरी दि. १५-६-२००४ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हो गए।

सुरत : प.भ. अमरशीभाई शामजीभाई मारवी (जीरागढ़ हालार) दि. १९-५-०४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

अहमदाबाद : प.भ. सोनी शांतिलाल रघुभाई दि. १६-५-२००४ के श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

अहमदाबाद : प.भ. कनुभाई के धर्मपत्नी अ.सौ. श्री सुशीलाबहन दि. १४-३-०४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुई है।

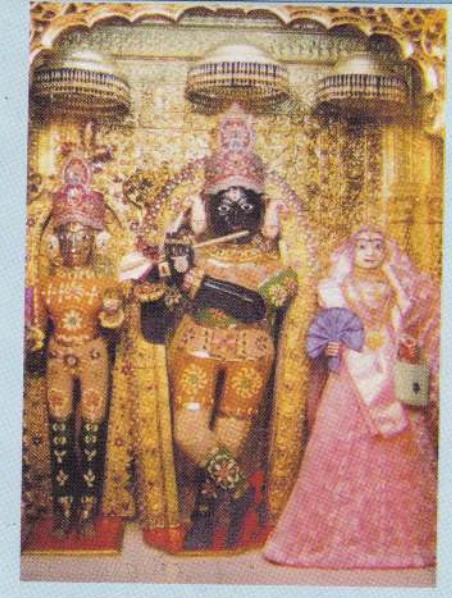
अहमदाबाद : प.भ. मनसुखभाई डाभी के धर्मपत्नी अ.सौ. निर्मलाबहन दि. २९-५-०४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुई है।

सुरेन्द्रनगर : प.भ. पुष्पाबहन नारायणदास अलैया दि. १३-६-२००४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुई है।

मोडासा : प.भ. हीराभाई शेठ दि. २१-६-२००४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।



ईडर मंदिर में षष्ठीपूर्ति महोत्सव में सेवा करनेवाले मुस्लिम समाज के आगेवान को प्रसन्नता का हार पहनाकर आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।



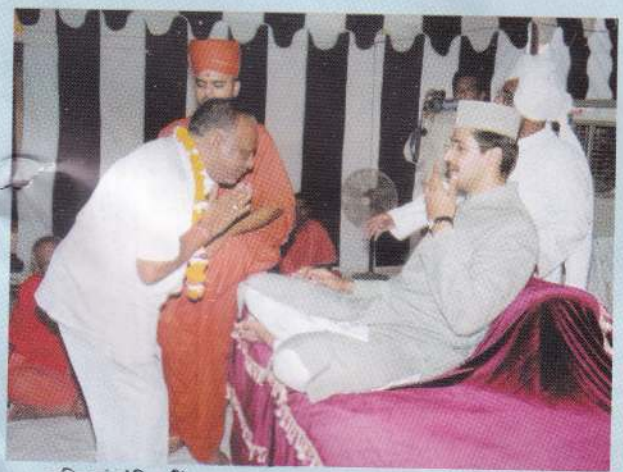
श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में विराजमानश्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के चन्द लेपन का अद्‌भूद दर्शन ।



ईडर मंदिर में पाटोत्सव के यजमान श्रीहरि के स्वस्त्र के साथ प.पू. लालजी महाराजका आशीर्वाद प्राप्त करते हुए ।

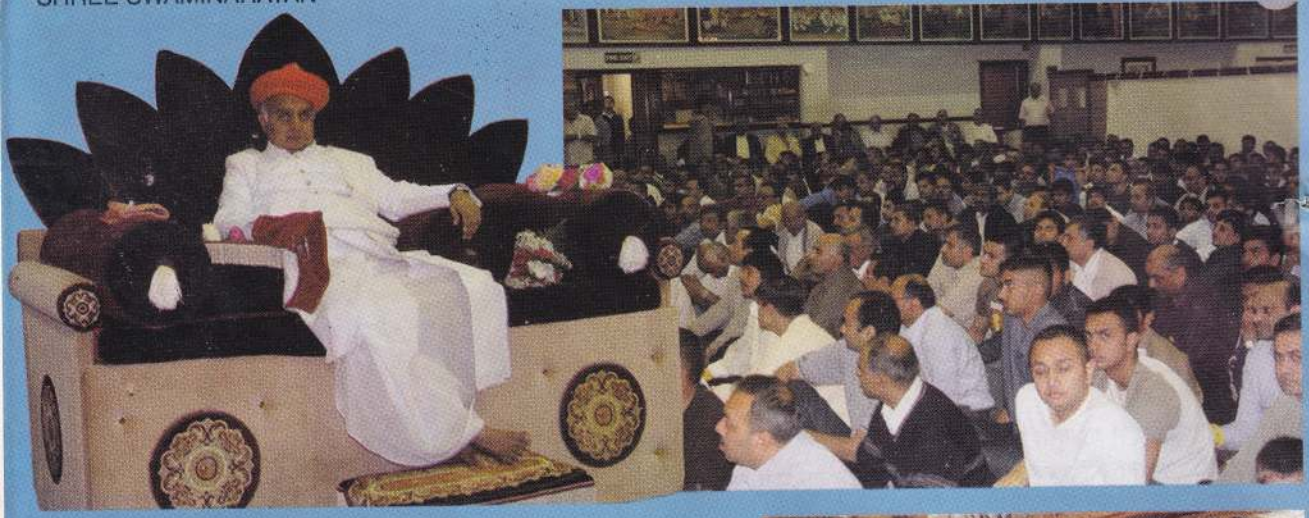


चराडवा मंदिर में समूह महापूजा ।





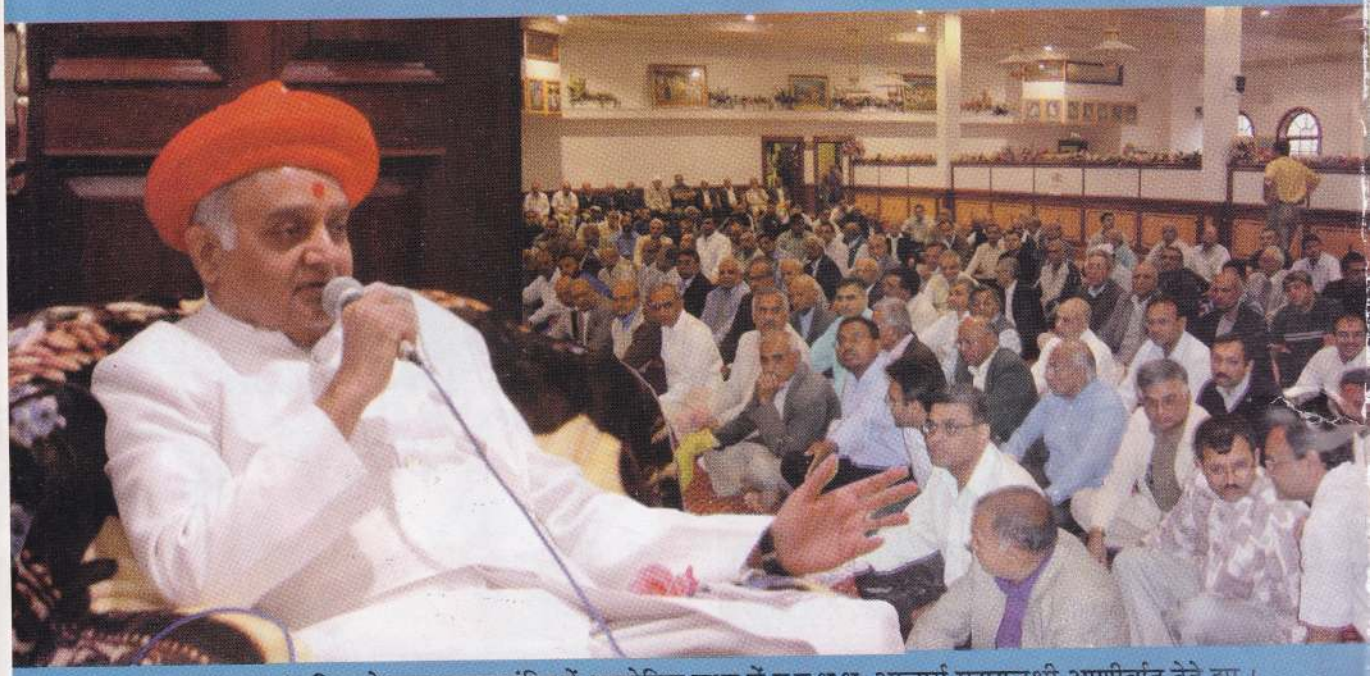
हरिद्वार मंदिर में यजमान प.भ. मुकुन्दभाई प.पू. लालजी महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त करते हुए तथा हरिभक्त कथा श्रवण करते हुए ।



लंदन विल्सडनलेन्न मंदिर में सभा में विराजमान होकर हरिभक्तो को दर्शन देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



रिद्रोल (ता. माणसा) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा की आरती उतारते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



नारायणपर (कच्छ) हरिभक्तो द्वारा लन्डन मंदिर में आयोजित सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आशीर्वाद देते हुए ।